RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. / भोपाल / 261 / 2015-17 प्रकाशन तिथि 29 अक्टूबर 2016

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका नवम्बर 2016

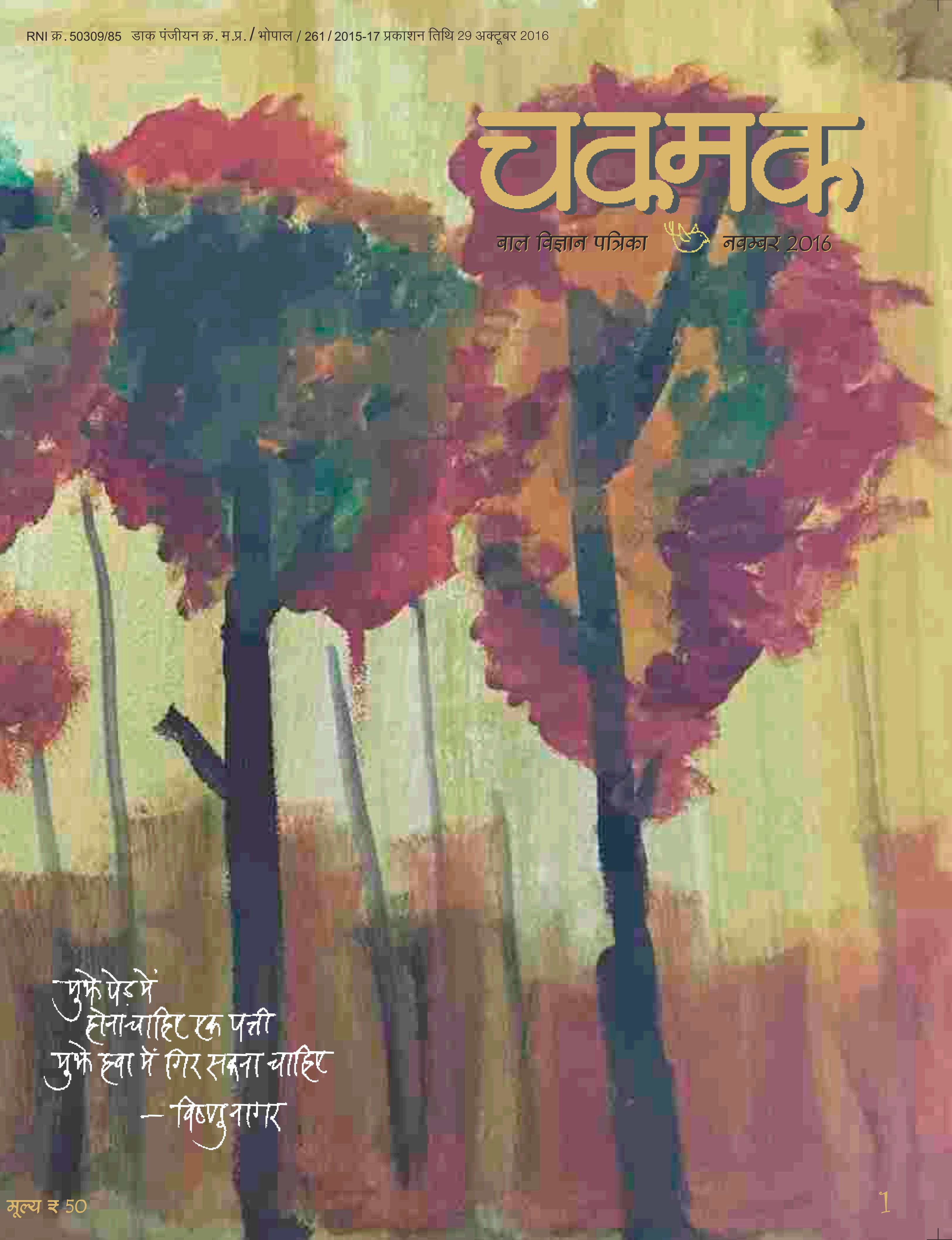

मुझे पेड़ में
होना चाहिए एक पत्ती
मुझे हवा में गिर सकना चाहिए
— विष्णु नागर

मूल्य ₹ 50

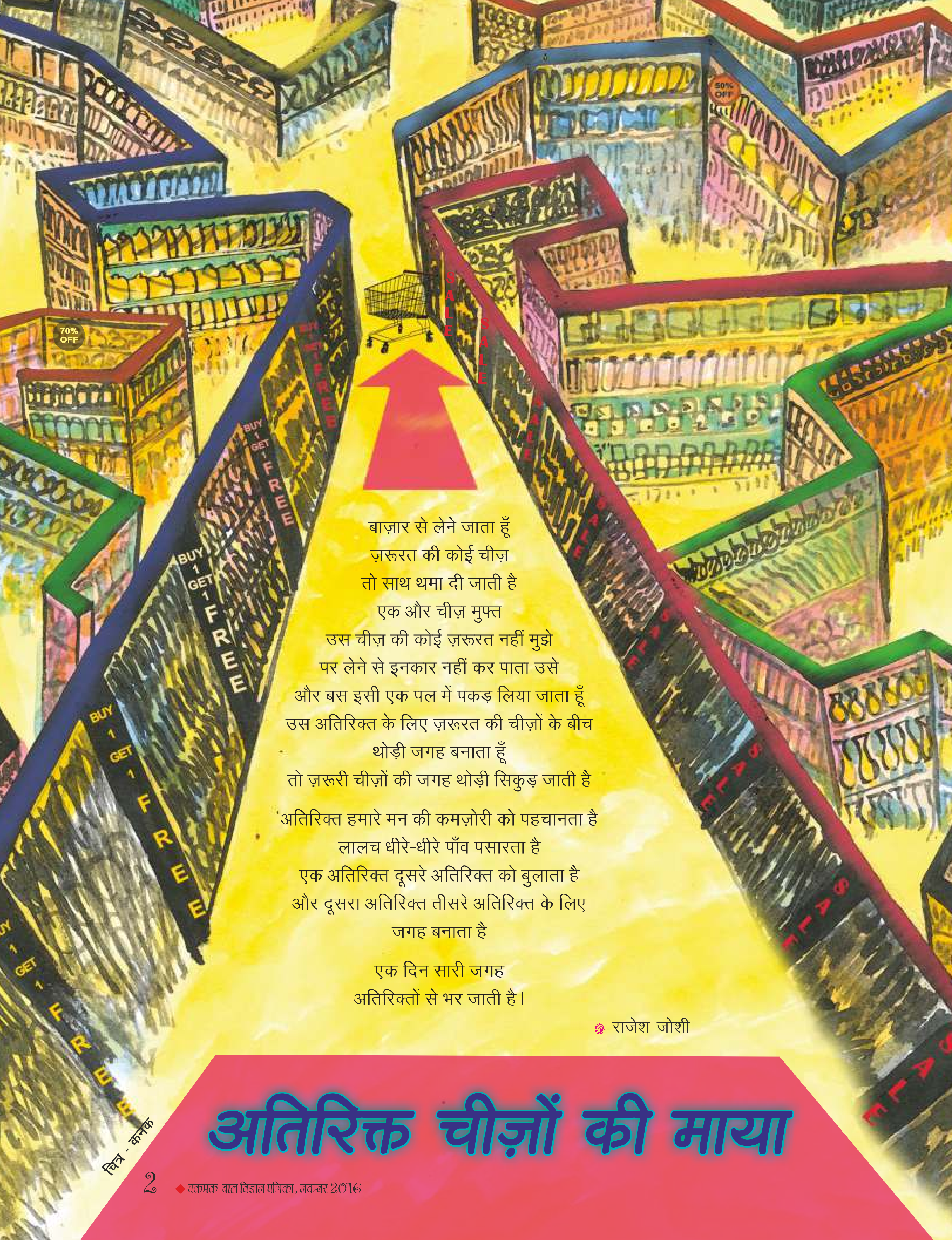

अतिरिक्त चीज़ों की माया

बाज़ार से लेने जाता हूँ
ज़रूरत की कोई चीज़
तो साथ थमा दी जाती है
एक और चीज़ मुफ्त
उस चीज़ की कोई ज़रूरत नहीं मुझे
पर लेने से इनकार नहीं कर पाता उसे
और बस इसी एक पल में पकड़ लिया जाता हूँ
उस अतिरिक्त के लिए ज़रूरत की चीज़ों के बीच
थोड़ी जगह बनाता हूँ
तो ज़रूरी चीज़ों की जगह थोड़ी सिकुड़ जाती है

अतिरिक्त हमारे मन की कमज़ोरी को पहचानता है
लालच धीरे-धीरे पाँव पसारता है
एक अतिरिक्त दूसरे अतिरिक्त को बुलाता है
और दूसरा अतिरिक्त तीसरे अतिरिक्त के लिए
जगह बनाता है

एक दिन सारी जगह
अतिरिक्तों से भर जाती है।

राजेश जोशी

चित्र - कनक

इस अंक में

2 अतिरिक्त चीज़ों की माया - राजेश जोशी
4 अगर-मगर - गुलज़ार
6 अभ्यास - रिहाना
9 नहीं नहीं और हाँ हाँ - विष्णु नागर
10 मेरा पन्ना
17 चीनीखोर - प्रभात
18 गोबा खाना भारी पड़ा - सिमरन सिंह
19 आम की चोरी - सुरभी सिंह
20 चाँद पर बिताए चौबीस घण्टे - शिखर बेरीवाल
21 बाघ - नबी बख़्श
24 मसाईमारा - कमला भसीन और बीना काक
28 एक था हाजी एक था नाजी - स्वयंप्रकाश
33 बोली रंगोली
34 माथापच्ची
38 नाचघर - प्रियम्वद
40 जानवर कैसे सोते हैं? - विनता विश्वनाथन
42 प्यारे भाई रामसहाय - स्वयं प्रकाश
44 कोहरा - उदयन वाजपेयी
45 भरोसे का लेन-देन - दिलीप चिंचालकर
47 चित्रपहेली - कविता तिवारी
48 आकाश में - नरेश सक्सेना

बाल विज्ञान पत्रिका
चकमक
अंक 362 नवम्बर 2016

बाल दिवस मुबारक हो!

जब झाँकता हूँ मैं खिड़की से बाहर सुबह के छह बजे,
दिखाई देती हैं ढेर सारी चिचियाती चिड़ियाँ

मुझे हर बार लगता है यूँ
सुना रही हों वो इक-दूसरे को कविता ज्यूँ

मैं भी कविता सुनाने को होता हूँ तत्पर
जिसे लिखा था बस पिछली दोपहर

अपनी खिड़की से बाहर झाँकने के बाद
मैं चैन से करता हूँ दोपहर का इन्तज़ार

- सिद्धार्थ, टीका गमरू, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश

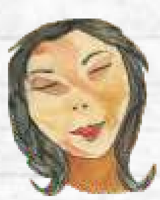

आवरण चित्र
रिद्धिमा, चौथी, संस्कार वैली स्कूल, भोपाल

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

सहायक सम्पादक
कविता तिवारी
मिताली अहीर

डिज़ाइन
दिलीप चिंचालकर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
वरुण ग्रोवर
प्रभात
मिहिर
कमलेश यादव
ब्रजेश सिंह

तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी के वित्तीय सहयोग से विकसित

एक प्रति :	50.00
वार्षिक :	500.00
तीन साल :	1350.00
आजीवन :	6000.00

सभी डाक खर्च हम देंगे।

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चैक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण-
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, म.प्र. 462 016, फोनः (0755) 4252927, 2550976, 2671017
फैक्सः (0755) 2551108, e mail - chakmak@eklavya.in, e mail - circulation@eklavya.in, www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

चित्रः अतनु राय

अगर मगर

गीतकार, फिल्मकार गुलज़ार से तुम भी कोई सवाल पूछना चाहो तो हमें ज़रूर लिख भेजना...

1. पक्षी और जानवर चप्पल क्यों नहीं पहनते?

- शुभम पान्चाल, सातवीं, देवास (म.प्र.)

- नंगे रहते हैं। नंगे जीते हैं। इसलिए।

2. अगर आपको किसी प्लैनेट पर जाने का मौका मिले तो आप कहाँ जाना चाहोगे?

- जेसमिन, छठी, आर्मी स्कूल शिलांग, मेघालय

- प्लूटो पर।

3. ऐसा क्या काम है जो आप नहीं कर सकते?

- शिवानी, छठी, के.के. अकेडेमी, लखनऊ (उ.प्र.)

- मैं शिवानी नहीं बन सकता, नहीं तो आपकी सहेली होता।

4. अगर आसमान नीचे होता और धरती ऊपर होती तब क्या होता?

- इरफान, चौथी, अंक इंडिया, नोएडा

- बहुत मुश्किल सवाल पूछते हो इरफान। मैंने उलटा लटककर भी देखा। आसमान फिर भी ऊपर ही रहा।

5. छोटे-छोटे बीजों से इतने बड़े-बड़े पेड़ कैसे बन जाते हैं?

- अंकित चौबे, चौथी, आदर्श हिन्दी हाई स्कूल, कोलकाता

- ज़मीन को जादू आता है।... आज़मा के देखो। ज़मीं-सा दूसरा कोई सख़ी कहाँ होगा ज़रा-सा बीज उठाले तो पूरा पेड़ देती है।

6. अगर कोई पानी से डरता है तो वो क्या करे?

- उत्कर्ष खैर, आठवीं, डीपीएस, पुणे

- पानी को पूल में बन्द कर दे और उस पर तैरना सीख ले। पानी डर जाएगा।

7. ईश्वर दिखाई क्यों नहीं देता?

- बिपाशा घोष, ग्यारहवीं, केन्द्रीय विद्यालय क्र.1, कांचरापाड़ा, पश्चिम बंगाल

- इंडिया बहुत कम आते हैं। ब्रह्माण्ड (कायनात) में रहते हैं।

8. गरीबी क्यों आती है?

- दादूराम, आठवीं, पूर्व मा. विद्यालय गर्गन पुरवा, बान्दा, उ.प्र.

- रोज़गार की किल्लत से, शराब की इल्लत से और समाजी ज़िल्लत से।

9. दुनिया में खुशनसीब व्यक्ति कौन है?

- हंसिनी बाघ, सातवीं, शा. उ. मा. शाला बोईरमाल, महासमुन्द, छत्तीसगढ़

- जो नसीब के भरोसे नहीं जीते।

10. इस दुनिया में लोगों के पास अलग-अलग भाषाएँ क्यों हैं?

- रनक, चौथी, पाथवेज स्कूल, गुड़गाँव

- सब हिन्दी नहीं पढ़े हैं ना इसलिए।

11. आप कहते हैं कि आप मुझ से कोई भी प्रश्न पूछो, पर क्या ऐसा कोई प्रश्न है जिसका उत्तर आपको नहीं आता है?

- काविश गुप्ता, चौथी, डीपीएस, लुधियाना

- एक तो यही सवाल है जिसका जवाब मेरे पास नहीं।

12. बचपन में आपको किस काम में बहुत मज़ा आता था?

- गौरांग, चौथी, डीपीएस पटना

- मूँगफली छीलकर खाने में।

13. पेड़ों में इतनी सारी पत्तियाँ कौन लगाता होगा?

- माही, सातवीं, डीपीएस सूरत

- पहले गिन के बताओ तब बताऊँगा मैंने कितनी लगाईं।

जमयादें
चश्मानयादें

अभ्यास

रिहाना

कभी डांस, कभी नाटक तो कभी पड़ोस के दोस्तों से घर भर जाता था। पर उस दिन घर में कोई नहीं था। अम्मी खाला के साथ बाज़ार गई थीं। अप्पी और मैंने घर का सारा काम निबटा लिया था। अब हम बोर हो रहे थे।

अम्मी पिछले दिनों बाज़ार से मेकअप का सामान लेकर आई थीं, यह मुझे मालूम था।

मैंने अप्पी से कहा, “चल, एक-दूसरे का मेकअप करते हैं!”

अप्पी बोली, “अम्मी आ गईं और उन्होंने मेकअप किए हुए देख लिया तो खूब मारेंगी!”

“अम्मी को आने में समय लगेगा। मैं तेरा मेकअप करती हूँ।” मैंने कहा।

थोड़ी ना-नुकर के बाद अप्पी तैयार हो गई। मैं नीचेवाले कमरे से बड़ा-सा शीशा उठा लाई और गेट में चिटकनी लगा दी। पलंग की दीवार के आगे शीशा रखा और उसके आगे कुर्सी लगाकर प्रवीण अप्पी को बैठने के लिए कहा। फिर अम्मी के मेकअप का बक्सा खोला। सबसे पहले फेस पाउडर निकाला और जल्दी-जल्दी उनके चेहरे पर लगाना शुरू किया। अप्पी घबराहट में इधर-उधर देखकर हिल रही थी। जल्दी-जल्दी करने से फेस पाउडर उनके चेहरे पर कहीं ज़्यादा तो कहीं कम लगा। मैं जल्दी-से डिब्बे में पानी भरकर लाई और तौलिए के एक कोने को भिगोकर उनके मुँह को साफ करने लगी। मुँह साफ करके मैंने दोबारा से फेस पाउडर और उसके बाद गालों पर लाली लगाई।

यह देखकर अप्पी बोली, “यह क्या लगा रही है! ढंग से लगा, मुझे जोकर मत बना!”

मैंने कहा, “पहली बार मेकअप कर रही हूँ और आप हैं कि हिली जा रही हो। खराब होने पर मेरा नाम लगाओगी। हिलो मत! बराबर करके लगाने दो।”

अप्पी बोली, “कहीं अम्मी न आ जाएँ?”

मैंने कहा, “नीचे की चिटकनी लगा कर आई हूँ। पता चल जाएगा। तुम चुपचाप बैठो, मेकअप करवाते वक्त बोलते नहीं हैं।”

मैंने अप्पी के गालों की लाली जहाँ ज़्यादा लग रही थी उसे गीले तौलिए से हलका-हलका साफ किया। फिर उनकी आँखों पर भी चॉकलेट कलर से आई शैडो करना

चित्रः श्वेता नम्बियार

शुरू किया। वह कलर अप्पी के गालों के शेड से मैच नहीं कर रहा था। मैंने डिब्बे के पानी से तौलिया भिगोकर आँखें साफ करनी शुरू कीं। वह मुझे धक्का मारते हुए बोली, "बार-बार तौलिये से चेहरे को रगड़ रही है, पीछे हट, मुझे नहीं करवाना मेकअप!" धक्का देते ही डिब्बे का पानी पलंग पर गिर गया। पहले तो हम एक-दूसरे को देखने लगीं, फिर एकदम से डिब्बे को बिस्तर से उठाया।

मैंने कहा, "ये रंग आपके चेहरे से मैच नहीं कर रहा था इसलिए पानी से साफ कर रही थी।"

डिब्बे को बाहर रखा और गीले बिस्तर पर सूखा तौलिया रखकर दबाने लगी ताकि गद्दे का पानी सूख जाए। फिर मैंने उन्हें कन्धों से पकड़कर कहा, "लो पानी रख आई, अब साफ नहीं करूँगी। बैठ जाओ कुर्सी पर!"

वह कुर्सी पर बैठ गई। मैंने पिंक रंग का आई शैडो उनकी आँखों पर लगाना शुरू किया। पर पिंक कलर आ ही नहीं रहा था। अप्पी की आँखों पर चॉकलेट कलर पहले से ही लगा हुआ था। अब मैंने उनकी पलकों पर मस्कारा लगाना शुरू किया। वह कहीं मोटा तो कहीं पतला लग रहा था।

वह बोली, "मेकअप कर रही है या मुझे सचमुच में जोकर बना रही है।"

मैंने कहा, "किसी के ऊपर प्रैक्टिस करूँगी तभी तो मुझे आएगा। एक-दो बार तो खराब होगा तभी तो ठीक से सीख पाऊँगी।"

"मुझे तो पूरी भूतनी बना दिया तूने! जैसे फिल्मों में भूतनी आ जाती है वैसी लग रही हूँ!" अप्पी हँसते हुए बोली।

"चलो अप्पी, अब मैं लिपस्टिक लगाती हूँ, आ.... करके मुँह खोलो!"

उन्होंने मुँह खोला। मैंने उन्हें अपना मुँह खोलकर दिखाया और कहा, "देखो, ऐसे बड़ा-सा आ..... करके मुँह खोलो तभी तो लिपस्टिक लगाऊँगी।"

वह बोली, "मेरे मुँह में घुसेगी क्या! ला मैं खुद ही लगा लेती हूँ।" कहते हुए उन्होंने लिपस्टिक के लिए हाथ बढ़ाया पर मैंने अपना हाथ पीछे खींचते हुए कहा, "नहीं मैं लगाऊँगी!"

उन्होंने कहा, "चल तू ही लगा दे!"

पहले नीचे के होंठों पर लिपस्टिक लगाई पर वह फैल गई। उँगली से बाहर फैली लिपस्टिक को साफ किया। ऊपरवाले होंठों पर लगाते समय दाँतों पर भी लग गई। अप्पी शीशे में देखती हुई बोली, "देखा, लग रही हूँ न चुड़ैल, खून पीनेवाली!"

वह कुर्सी से उठी और मेरी तरफ अपने पँजे बढ़ाने लगी तब तक नीचे से अम्मी के दरवाज़ा खटखटाने और पुकारने की आवाज़ आई। मैं अम्मी का मेकअप का बक्सा जल्दी-जल्दी बन्द करने लगी। अप्पी बाथरूम में साबुन से मुँह धोने लगी। मैंने कुर्सी को उसकी जगह पर रखा। शीशा और मेकअप का बक्सा नीचेवाले कमरे में रखा और दरवाज़ा खोल दिया।

अम्मी बोली, "बड़ी देर लगा दी!"

(शेष भाग पेज 46 पर)

Azim Premji University

ADMISSIONS OPEN

Azim Premji University was established under the Azim Premji University Act 2010 of the Government of Karnataka. Azim Premji Foundation, the sponsoring body, set up the University as a fully philanthropic and not-for- profit entity with a clear social purpose. The University's key mission is to prepare graduates with great competence, integrity and social commitment who can contribute to the Education and Development sectors in India.

UNDERGRADUATE PROGRAMMES

- B.A. (Economics / Humanities)
- B.Sc. (Biology / Physics)

POSTGRADUATE PROGRAMMES

- M.A. Education
- M.A. Development
- M.A. Public Policy & Governance
- LL.M. in Law & Development

We offer full or partial scholarships for deserving students, based on family income

Visit our website to apply online: **azimpremjiuniversity.edu.in/apply**
E-mail: **admissions@apu.edu.in** or Call **1800 843 2001**
www.facebook.com/azimpremjiuniversity
Address: Pixel B, PES Campus, Electronics City, Hosur Road, Bengaluru - 560100

नहीं-नहीं और हाँ-हाँ

विष्णु नागर

नहीं-नहीं और हाँ-हाँ
नहीं-नहीं
एक बार
मिलने गए
हाँ-हाँ से

“नहीं-नहीं
जल्दी है मुझे,”
कहकर भी नहीं-नहीं
हाँ-हाँ के घर
जम के बैठ गए

बहुत देर तक होती रही उनमें
हाँ-हाँ
और नहीं-नहीं
नहीं-नहीं और
हाँ-हाँ
हाँ, नहीं
नहीं, हाँ

जब बहुत हाँ हो ली
और बहुत नहीं भी
तो नहीं-नहीं चलने को उठे

उनसे बोले हाँ-हाँ :
“नहीं-नहीं, तुम कहाँ चले
मैं नहीं-नहीं तो कर लूँ
तुम हाँ-हाँ तो कर लो
कुछ तो करें दोनों
मिल-जुल कर।”

चित्र - कनक

मेरा पन्ना

– अनिरुद्ध पोपली,
दून स्कूल, बारहवीं, देहरादून

मनीषा की सैर

एक बार की बात है। देवास नाम के शहर में मनीषा नाम की एक लड़की रहती थी। उसके पास एक बहुत ही सुन्दर गुड़िया थी। एक दिन वह अपनी गुड़िया के साथ खेल रही थी। खेलते-खेलते वह अपने भाई सूरज से टकरा गई। उसने अपने भाई से पूछा कि कहाँ जा रहे हो। सूरज ने कहा कि मैं अपने दोस्तों के साथ जामफल के पेड़ के नीचे जामफल तोड़ने जा रहा हूँ। मनीषा ने कहा कि भैया मैं भी साथ चलूँगी। मैं यहाँ पर अकेले बोर हो रही हूँ। सूरज ने कहा, "ठीक है चलो पर पहले माँ से पूछ कर आओ।" मनीषा ने कहा, "ठीक है।" फिर वे सब जामफल के पेड़ के नीचे जाम तोड़ने गए। उस पेड़ पर एक बन्दर बैठा था। सूरज और उसके दोस्त बन्दर को पत्थर मारने लगे। वह बन्दर उन लोगों के पीछे पड़ गया। किसी तरह उन लोगों ने उस बन्दर से पीछा छुड़ाया। वह भागते-भागते कहीं दूर आ गए। वहाँ पर एक झोपड़ी थी। वह लोग उस झोपड़ी के अन्दर गए। उस झोपड़ी के अन्दर उन्हें एक बुढ़िया मिली। उन लोगों ने उस बुढ़िया से घर का रास्ता पूछा। उस बुढ़िया ने उन्हें रास्ता बता दिया। जाते-जाते रास्ते में बारिश होने लगी। वहीं पास में एक स्कूल था। वह लोग जाकर वहाँ खड़े हो गए। वहीं पर एक किताब पड़ी हुई थी। वह किताब गीली हो रही थी। उन्होंने उसे उठाकर किनारे पर रख दिया। बारिश बन्द होने के बाद वह घर जाने लगे। जाते-जाते उन्हें रास्ते में एक बगीचा दिखा। उसमें बहुत सुन्दर-सुन्दर फूल थे। मनीषा ने वहाँ से एक फूल तोड़ लिया। वह खुशी-खुशी अपने घर पहुँच गए और जाके सो गए।

– प्रियांशु श्रीवास्तव, सातवीं,
केरला पब्लिक स्कूल देवास, म. प्र.

अमीसा की खुशी

एक लड़की थी। उसका नाम अमीसा था। वो अकेले माँगने जा रही थी और बहुत चुप थी। उसके पैर भी जल रहे थे और उसे प्यास भी लग रही थी। वो एक जगह में बैठ गई और रोने लगी। तभी वहाँ से एक भैया जा रहे थे। भैया ने उससे पूछा कि क्या हो गया। उसने बोला कि मेरे पैर जल रहे हैं और प्यास भी लग रही है। भैया ने कहा कि तुम्हारा घर कहाँ है अमीसा ने कहा कि मेरा घर गोविन्दपुरा में है। भैया ने कहा कि तुम्हारे घर में कितने लोग रहते हैं। उसने कहा कि पूरी फैमिली रहती है। तुम पैसे क्यों माँग रही हो क्योंकि फिल्म देखने जाना है इसलिए माँग रही हूँ। भैया ने उसे 100 रुपए दे दिए और वो खुश हो गई। भैया ने

- दामिनी, मुस्कान संस्था भोपाल, म. प्र.

- रूपा, तीसरी, प्रथम, राजस्थान

- श्रद्धा बावसकर, तीसरी, देवास, म. प्र.

मेरा पन्ना

– कार्तिक पँवार, सातवीं, होली लाइट अकेडमी, देवास, म. प्र.

जुगनू बन मैं क्या करती

अगर मैं जुगनू होती
रातभर उड़ती रहती
जगह-जगह रोशनी फैलाती
सब का मन बहलाती
बच्चों को खुश कर जाती
उड़-उड़कर मौज मनाती
जगह-जगह उड़ जाती
सपनों में खो जाती
सबको रोशनी देती
अगर मैं जुगनू होती

– सोनिया, पाँचवीं, रा. प्रा. विद्यालय गणेशपुर, उत्तराखण्ड

– सैयरा, 13 साल, पूर्णा लर्निंग सेंटर, बैंगलोर

अभि जल्दी उठ जा

वो किसी रविवार की दोपहर थी। अभि खेलकर आया ही था। वो बहुत थका हुआ था। इसलिए सो गया। अनि उसके साथ खेलना चाहता था। अनि का मन बार-बार उसे जगाने का हुआ। ताकि वो उसके साथ खेल सके। मैंने अनि को मना किया कि अभि को मत जगाओ।

थोड़ी देर बाद अनि बोला कि मैंने उसके सिर के ऊपर की दीवार पर लिख दिया है "अभि जल्दी उठ जा", पर वो फिर भी नींद से नहीं उठ रहा।

अनि शायद सोच रहा था कि अभि सपने में वह पढ़ लेगा। और उठ जाएगा।

मैं इस लिखावट के नीचे सोया और जग जगकर यह लिखावट देखी। जाने कितने कवि सोए इस लिखावट के नीचे। जाने कौन-कौन! और दिवार को देखकर मुस्कराए...बस मुस्कराए। और जगकर पूछा, "बताओ बच्चे क्या खेलना है?"

(इसे अभि के पिता शिव गाँधी ने लिखा है।)

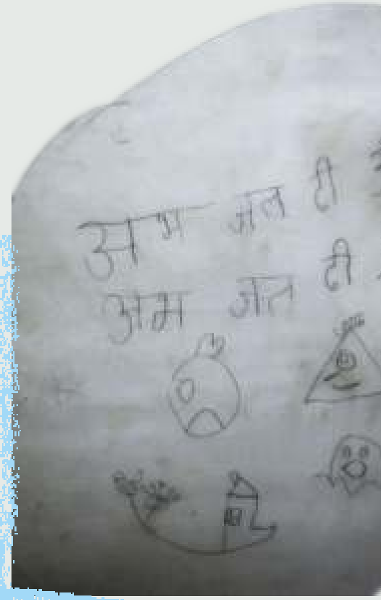

- सन्तुष्टि बावसकर, चौथी, देवास, म. प्र.

सर्दी आई

सर्दी आई सर्दी आई
ठण्ड के पहले सर्दी आई
बिस्तर के अन्दर भी सर्दी
बिस्तर के बाहर भी सर्दी
बाहर सर्दी घर में सर्दी
पैर में सर्दी सर में सर्दी
धूप में दौड़े तो भी सर्दी
छाँव में बैठे तो भी सर्दी
खेत में सर्दी गेहूँ में सर्दी
पेड़ में सर्दी पत्ते में सर्दी।

- बनवारी, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
सवाई माधोपुर, राजस्थान

मेरा पन्ना

- धरना चौधरी, सातवीं, डीपीएस पुणे

चूहा और मकड़ी

एक बार की बात है एक दिन मकड़ी कहीं जा रही थी। तो एक शिकारी आया एवं उसने पकड़कर मकड़ी को अपने झोले में रख लिया। यह घटना एक चूहा अपने बिल में से देख रहा था। चूहा गया एवं उसने अपने तेज़ दाँतों से झोले को काटकर मकड़ी को आज़ाद कर दिया। बाद में एक बार चूहा पहाड़ के ऊपर से जा रहा था, उसका पैर फिसला एवं वह गिरने लगा तभी मकड़ी वहाँ आई और बोली कि चूहे ने मेरी जान बचाई थी। अब मैं चूहे की जान बचाऊँगी। तब तेज़ी से मकड़ी ने जाल बुन दिया एवं चूहा उस पर गिर गया। इस प्रकार चूहे की जान बच गई। फिर चूहा एवं मकड़ी की दोस्ती हो गई एवं दोनों खुशी-खुशी घर चले गए।

—वैदिक त्रिपाठी, पहली, बैतूल, म. प्र.

- सिद्धराज एस तोमर, दसवीं, दून स्कूल, देहरादून

तोता और आम

एक बार मैं, मेरे भैया और मेरी छोटी बहन घूमने जा रहे थे। रास्ते में एक आम का पेड़ था। मेरी छोटी बहन ने बोला, "भैया मुझे आम खाना है।" भैया ने बोला, "ठीक है मैं अभी तोड़कर लाता हूँ।" जब भैया पेड़ के पास गए तो वहाँ पर एक तोता था। उसे चोट लगी थी। मैंने बोला, "भैया इसे हम घर लेकर चलते हैं।" भैया ने कहा, "नहीं, हम इसे घर नहीं ले जाएँगे। पता नहीं किसने इसे मारा है और अगर ले भी गए तो यह मर जाएगा।" मैंने बोला, "कोई बात नहीं मरने दो लेकिन तब तक इसे हम अपने पास रखेंगे।" फिर उसे हम अपने घर ले गए। भैया ने बोला, "इसे घर ले आई हो तो दवाई भी लगाओ।" मैंने बोला, "ठीक है लगाती हूँ।" फिर उसे हमने दवा लगाया। और रात को उसे एक पिंजरे में रख दिया। सुबह हमने देखा कि उसका घाव थोड़ा-थोड़ा भर गया था। हमने उसे पिंजरे से निकाला और बाहर लेकर आए। हमने उसे उड़ाने की कोशिश की पर वो थोड़ी दूर उड़कर गिर जा रहा था। तभी माँ बोलीं, "अभी यह पूरी तरह ठीक नहीं हुआ है। इसलिए इसे अभी मत उड़ाओ। वरना यह गिरेगा तो इसका घाव और बढ़ जाएगा।" मम्मी उसे अपने हाथों में लेकर गईं और दवा लगाकर उसे फिर पिंजरे में रख दिया। और बोलीं, "अब तुम जाकर खेलो।" और फिर हम खेलने चले गए। और जब हम रात को सोने गए तो देखा कि तोता सो रहा है। फिर हम भी सो गए। सुबह जब हमने उसे उड़ाया तो वह उड़ने लगा। हमने उसके साथ खूब खेला और मस्ती की। पाँच-छह दिन बाद हमने उसे छोड़ दिया।

– सुनीता कुमारी, आठवीं,
रा. पू. मा. विद्यालय खिलड़िया, खटीमा, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

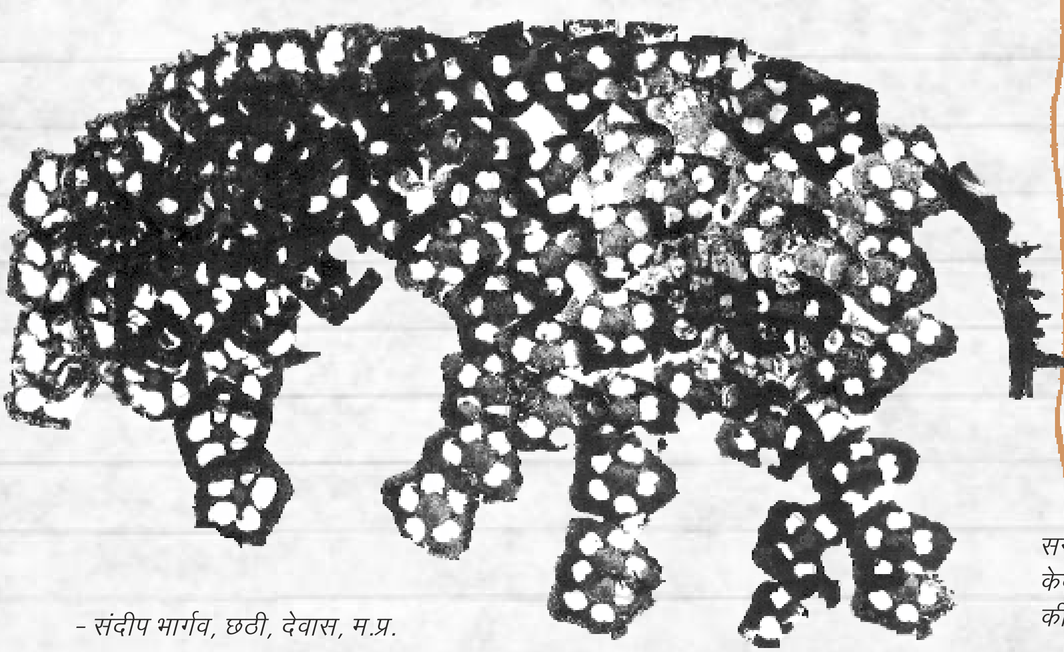

- संदीप भार्गव, छठी, देवास, म.प्र.

वह चीता जो...

वह चीता जो
लपक-लपककर
भरी नदी का ढील टटोलकर
मछली ले जाता है
वह नन्हा संतोषी चीता।
पीली पूँछवाला मैं हूँ।
मुझे मछली से बहुत प्यार है।

वह चीता जो
दौड़ लगाकर
जीत के वापस आता है
वह नन्हा गबरीला चीता,
पीली पूँछवाला मैं हूँ
मुझे दौड़ से बहुत प्यार है

वह चीता जो
कंठ खोलकर
सुरीले स्वर में गा लेता है।
वह नन्हा मुँहबोला चीता
पीली पूँछवाला मैं हूँ।
मुझे विजन से बहुत प्यार है।

– सन्तति समिहा, छठी, डीपीएस पटना

सन्तति की यह कविता हिन्दी के प्रख्यात कवि केदारनाथ अग्रवाल की कविता वह चिड़िया जो की तर्ज़ पर बढ़ाई गई है।

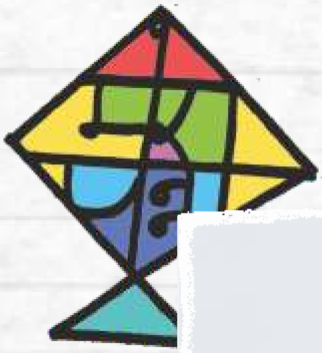

– आकार गुप्ता, आठवीं, दून स्कूल, देहरादून

बदनसीब तोता

मैं पंछी नीलगगन का
हूँ कैद पिंजड़े में।
न पंख फैला पाता
लोहे की जंज़ीरों में।
थोड़े दाना-पानी
संग परिवार खाता था।
हँसते, खेलते, गाते
दिन बीत जाता था।
कैद करना पंछी को
है अजब रीत कैसी!
तुम क्या जानो सुख अभिलाषा
मुझ पर क्या-क्या बीती
अपनी ज़िन्दगी पर मैं
हँसता कभी रोता हूँ
कभी-कभी सोचता हूँ
मैं एक बदनसीब तोता हूँ।

– प्रवीण कुमार, छठी,
हनी ड्यु प्वाइंट स्कूल
पटना, बिहार

चूहा

मेरे घर में एक चूहा था, जो बहुत सुन्दर था। वह बहुत छोटा था। और बहुत सफेद है और उसकी आँखें नारंगी थीं। वह बहुत सुन्दर दिखता था। वह बहुत तेज़ दौड़ता था। वह तो हमारे कपड़े भी कुतरता था। मेरे बिस्तर के नीचे घुस जाता था। बहुत मस्ती करता था।

उसे बिल्ली मारकर चली गई। उसी दिन मेरा चूहा मर गया। उस दिन से घर में अजीब शान्ति हो गई है।

—भाग्यश्री भालसे, पाँचवीं,
केन्द्रीय विद्यालय देवास म. प्र.

चीनीखोर

शक्कर के दाने कुल चार
बुढ़िया लेकर आई उधार
एक दाना चींटी को डाला
एक को रखा लगाकर ताला
एक दाने को खाकर बुढ़िया
करने बैठी सोच विचार
शक्कर के चक्कर में मुझको
पकड़ न ले जाए सरकार
अगले दिन अखबारों में था
इसी खबर का शोर
देकर दबिश पुलिस ने पकड़ी
बुढ़िया चीनीखोर

- प्रभात

चित्रः कनक

चित्र: श्वेता नम्बियार

गोबा खाना भारी पड़ा

हम सब रायपुर में थे। एक दिन अलीचना और बगल के घरवाला लड़का लकड़ी लाने जा रहे थे। अलीचना बोली कि गोबा खाना है तो चलो। दादी बोली, "वो सब लकड़ी फोड़ेंगे, तुम सब क्या करोगे?" पर हम नहीं माने और अलीचना के पीछे चले गए।

गाँव के बाहर एक जगह खूब सारे खजूर के पेड़ हैं। हम वहीं रुके। अलीचना लकड़ी फोड़ने लगी। वो लड़का भी अपने घर के लिए लकड़ी फोड़ने लगा। अलीचना बोली, "लकड़ी फोड़ने के बाद गोबा निकालेंगे।" हम सब मोबाइल पर फिल्म देखने लगे। तभी सारी तरफ माखी फैल गई। हम भाग के गेहूँ के खेत में दब गए। हम खेत में लेटे रहे और माखी ऊपर उड़ती रहीं। बहुत देर हो गई तो हम बाहर निकले।

हम सब को बहुत सारी माखियों ने काटा। मेरी छोटी बहन प्रीति तो बेहोश ही हो गई। उस लड़के ने उसे गोद में उठाया और हम सब घर भागे। रास्ते में समझ में आया कि वो लड़का जो पेड़ काट रहा था उसमें माखी का जाल था। पेड़ गिरने से वो सब तरफ फैल गईं।

घर पहुँचे तो दादी ने हमें देखा। वो खूब हँसी। बोली, "कहा था न घर में रहो! उस लड़के ने सबकी चोट लोहड़े से उतारा। श्रुति को सिर्फ एक माखी ने काटा था। वो घमण्ड बता रही थी। हम सब ने कहा कि एक साथ रहो। पर गोबा के लालच में तुम सब भग गई। और माखी ने काट खाया। काका भी हँसकर चिढ़ा रहा था।

– सिमरन सिंह, 10 साल, अरण्यवास, भोपाल

गोबा -खजूर के तने के अन्दर का गूदा।

आम की बोरी

पिछले गर्मी के छुट्टी में हम घर गए। बहुत गर्मी पड़ रही थी। बासोदा में अच्छा नहीं लग रहा था। फिर बा (पिता) ने कहा, "चलो ओसेरे चलते हैं। खुले में रहेंगे, अच्छा लगेगा।" बा ने जीप-कार में पाल और दूसरा सामान भरा और हम चले। बा-मौसी, हम छह भाई-बहन। बासोदा से थोड़े दूर आम के बगीचे के पास डेरा डाला। दादा (मौसी का बा), मौसी की बेन, और भतीजी भी थे। मेरे काका का लड़का राजाराम, उसकी लुगाई रजनी और राजाराम की बहनें जिपती और शबनम। बा के काका का लड़का शिशुपाल भी था। उसकी पीठ खराब है। चारों हाथ-पैर पर चलता है। उसकी लुगाई गूँगी है। वो दोनों और उसकी लड़की कैटरीना, तीनों माँगते हैं। मौसी के एक भतीजा आसिफ भी था। मेरे उम्र का है। दिनभर बदमाशी करता है।

बाईया और लड़कियाँ बीनते थे। शिशुपाल का परिवार माँगता था। दादा और राजाराम शिकार करते थे। बच्चे इधर-उधर खेलते। हम अकसर बगीचे से आम बिनते। कभी-कभी पत्थर से गिरी भी लेते। एक दिन आसिफ और कैटरीना छोटी-छोटी बोरियाँ लेकर बगीचे में चले गए। आसिफ पेड़ पर चढ़ गया और आम गिरान लगा। कैटरीना बोरी में भरने लगी। तभी मारस्सा आ गए। दो थे। आसिफ एक बोरा उठाकर भागा। कैटरीना वहीं रह गई। छह साल की है। दोनों मारस्सा उसे पकड़ के लिए आए। दोनों ने एक-एक हाथ पकड़ा। कैटरीना ज़ोर-ज़ोर से रोती हुई बीच में चल रही थी। वो हमारे डेरे पर आ गए। दोनों मारस्या बहुत गुस्से में थे। बोले, "तुम लोग रोज़ आम चुराते हो?" हम सबने मना किया। कैटरीना ज़ोर-ज़ोर से रोती रही।

मारस्सा ने एक एक कर पूछा, "बोलो आम कहाँ हैं।" हमने कहा, "हमने नहीं लिया। तलाशी ले लो।" बा ने कहा, "बच्चे कभी-कभी एक आध बिन लाते हैं।"

चिकल्लस हो रही थी कि मेरी बहन सुनैना घुमते हुए घर पहुँची। मास्साय ने उससे पूछा, "आम कहाँ हैं?" उसने पेड़ पर रखे बोरी को बता दिया। सब चुप हो गए। बा ने कहा पैसे ले लो। 100 रुपए में बात तय हुई। बा ने सबसे जमा करके दे दिया।

मारस्या चला गया। मौसी ने सुनैना को सन्टी ही सन्टी दिए। बोली अब से भेद किया तो जान से मार दूँगी।

– सुरभी सिंह, 12 साल, अरण्यवास, भोपाल

मन की बात

मन करता है मैं उड़ जाऊँ
मन करता है कि मैं
आसमान पर घर बनाऊँ
मन करता है कि
चाँद के साथ खेलूँ मैं
मन करता है कि
आकाश को छू लूँ मैं
नदी के किनारे पानी पिऊँ
बैठ डाल पर गाना गाऊँ
फिर मैं बिस्तर में सो जाऊँ

- सूरज कुमार, चौथी,
अपना स्कूल कानपुर, उ. प्र.

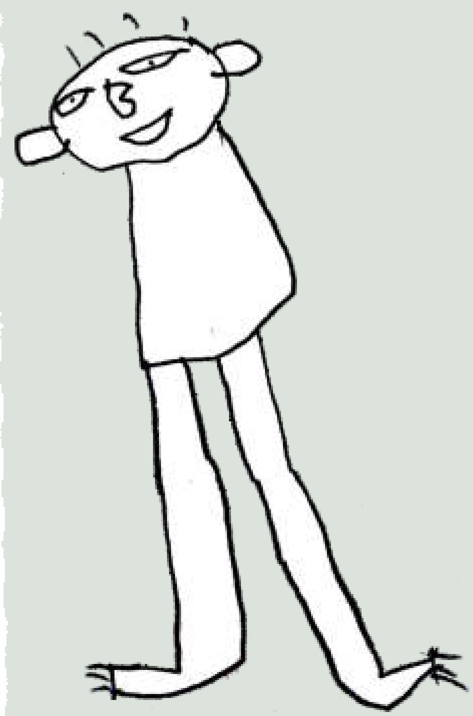

– विजय मेघवाल, तीसरी, प्रथम, जयपुर

चाँद पर बिताए चौबीस घण्टे

शिखर बेरीवाल, चौथी
सनसिटी स्कूल, गुड़गाँव

मेरा नाम शिखर है। मैं शहर के मशहूर वैज्ञानिक डॉक्टर धवन की प्रयोगशाला में अकसर जाया करता था। वे मेरे पापा के खास दोस्त थे। उनके पास तरह-तरह की दूरबीनें थीं। मैं खास तौर पर शनिवार की रात को दूरबीन से घण्टों चाँद-तारे देखता था। धीरे-धीरे आकाश से मेरी दोस्ती होने लगी।

चित्रः प्रशान्त सोनी

आज शरद पूर्णिमा की रात थी। आसमान में पूरा चाँद चमक रहा था। मैं बहुत खुश था कि आज मुझे करीब से चाँद दिखेगा। मैंने हमेशा की तरह डॉ. धवन की प्रयोगशाला के सामने साइकिल खड़ी की और अन्दर गया। अन्दर डॉ धवन दिखाई नहीं दिए। बिना समय गँवाए मैं सीधा प्रयोगशाला में गया। वहाँ मैं उनकी नई दूरबीन से चन्द्रमा देखने लगा। अचानक मुझे लगा कि चन्द्रमा पर कोई इमारत जैसी छाया दिख रही है। अपने संशय को दूर करने के लिए मैं डॉ धवन को ढूँढने गया पर वे कहीं दिखाई नहीं दिए। मैं उनकी निजी प्रयोगशाला में भी गया। वे वहाँ भी नहीं थे। तभी मेरा ध्यान किताबों की अलमारी की ओर गया। वह मुझे बड़ी अजीब-सी लगी। जैसे ही मैं करीब गया, मैं लड़खड़ाकर गिर गया। यह क्या! अचानक एक दरवाज़ा खुला। मैं उत्साह से उसमें घुस गया। अन्दर एक गुफानुमा रास्ता था। कुछ दूर जाने पर मैं एक कक्ष में पहुँचा। वहाँ एक गोलाकार यान था। जैसे ही मैं उसमें बैठा, उसका दरवाज़ा बन्द हो गया। मैं घबराकर इधर-उधर हाथ-पैर मारने लगा और मुझसे बटन दब गया। बटन के दबते ही वो यान हरकत में आ गया। और हवा से भी तेज़ उड़ने लगा। मैं घबराकर चीखने लगा लेकिन कुछ नहीं हुआ। यान धीरे-धीरे पृथ्वी की कक्षा से बाहर आ गया। पृथ्वी गोल और नीली लग रही थी। इस खूबसूरत नज़ारे को देखकर मेरी घबराहट कुछ कम हुई।

कई घण्टों बाद मैंने महसूस किया कि यान किसी ग्रह पर उतर रहा है। सामने लगे चैनल पर लिखा दिखने लगा, “धरती के उपग्रह चाँद पर आपका स्वागत है। कृपया बाहर निकलने से पहले रखा हुआ विशेष सूट पहन लें।” मैंने देखा कि कुर्सी नीचे एक सूट रखा था जिसे मैंने पहन लिया। उसे पहनने के बाद जैसे ही दरवाज़े को छुआ वह खुल गया। बाहर एक बड़ी-सी इमारत दिखी। शायद इसे ही मैंने दूरबीन से देखा था।

(शेष भाग पेज 46 पर)

एक चित्रकार से मुलाकात

बाघ नबीबख़्श

मेरा इलाका

ये हैं मशहूर चित्रकार नबीबख़्श मंसूरी। साथ में है उनकी लिखी एक चिट्ठी और उनके बनाए बाघ के कई सारे चित्र। अगले किसी अंक में हम फिर उनसे मुलाकात करेंगे। तुम भी चिड़ियों को, गाय, बैल, भैंस, कुत्ता, बिल्ली कितने ही जानवरों को देखते होगे। उनके साथ हुए अलग-अलग अनुभव एक चित्र में कैसे समा सकते हैं! शायद इसीलिए चित्रकार नबीबख़्श ने बाघ के अनेक-अनेक चित्र बनाए। जैसे, बाघ को बार-बार याद किया। जैसे, बाघ के अनुभवों को बार-बार समझा। क्या तुम अपने किसी प्रिय को चित्र बना-बनाकर इस तरह याद करना चाहोगे?

आज मैं आपके साथ ना होता, अगर उस दिन बाघ ने मुझे बख्शा ना होता। तब मैं दस साल का था। पहाड़ियों में घूमने का शौकीन। मैं उस दिन बाघ देखकर डर के मारे पहाड़ी से फटाफट नीचे उतरकर और अपनी माँ की गोद में छिप गया था। तब माँ, पिताजी, चाचा, चाची, दादी... सब ने मेरे नए जन्म को चूम-चूमकर नहला-सा दिया था। बाद में सबने अपने-अपने ढँग से मेरा डर दूर करने के लिए बाघ की कई सच्ची-झूठी कहानियाँ सुनाईं थीं।

दोस्तों के साथ

तब मेरे तरंगी दिमाग ने मुझ में एक बाघ को जन्म दे दिया। मैं अपने आप में एक बाघ को महसूस करने लगा। दोस्तों के साथ बाघ-बकरी का खेल खेलना, बाघ की शान से चलना, चेहरे पर बाघ जैसे रंग लगाना, बाघ के चेहरे जैसे मुखौटे बनाकर और पहनकर दोस्तों को डराना....वगैरह ऊटपटाँग हरकतें करते-करते मुझमें बाघ का एक वहम-सा आ गया था। मेरे इस मिजाज़ ने ही शायद मुझे आज एक फनकार बना दिया है।

जंगल का साथी

पत्तियाँ और जीवन

मेरा बचपन फिर एक बार बेदार हो उठा, जब इन्द्रधनुषी
चित्रों का नायक बन जाता है प्यारा-सा बाघ।

आइए हम सब बाघ से प्यार करें,

बाघ की हिफाज़त करें।

नबी बख्श

पूजा

जंगल में मंगल : अन्तिम भाग

दो बहनों की मसाईमारा यात्रा

कमला भसीन

फोटोः बीना काक

वे हमें फिर मिले। हम उन्हें दूध पीते, एक-दूसरे को चाटते हुए देखते रहे और फोटो खींचते रहे। ज़ाहिर था कि माँ चीते को अपना और अपने बच्चों का पेट भरने के लिए शिकार करना था, सो हम अगले काण्ड के इन्तज़ार में बैठ गए। घण्टे भर बाद माँ चीते ने बहुत दूर एक हिरन और उसके बच्चे को देखा। फिर पैंतरेबाज़ी शुरू हुई। वह धीरे-धीरे शिकार की ओर बढ़ने लगी। कभी बैठ जाती, फिर कुछ कदम आगे बढ़ाती थी। हिरनी जानती थी कि शिकारी उसकी ओर बढ़ रहा है मगर वह बच्चे के साथ भाग न सकी। चीते ने मौका पाकर दौड़ लगाई। हिरनी भाग गई, बच्चा पकड़ा गया। वह शिकार को पकड़कर बच्चों के पास ले आई। बच्चों ने खाना शुरू किया मगर माँ चौकीदारी कर रही थी। उसे पता था कि शेर फिर से आ सकते हैं।

फ्रांसिस ने बताया कि जानवरों की नाक बहुत तेज़ होती है। जो आँखों से नहीं दिखते उनकी मौजूदगी नाक से पता लग जाती है। शेर और चीते एकदम छुपकर भी बैठे रहें, आँख से बिलकुल न दिखें, तो भी जानवर जानते हैं कि वे वहीं कहीं हैं। हाँ, हवा के रुख का इस जानने पर असर पड़ता है। अगर हवा का रुख शिकार की ओर से है तो उन्हें शिकारी की खबर नहीं लग पाती है और तब शिकारी उन्हें पकड़ सकते हैं।

हमने देखा कि अब चीता बच्चों ने भी खाना छोड़ दिया था और वे भी माँ के पीछे डरे हुए खड़े थे। कुछ ही देर बाद एक शेर उनकी ओर आता नज़र आया। चीते ने बच्चों को भागने को कहा और वह दिलेर माँ खुद शेर की ओर बढ़ने लगी, मानो कह रही हो, "आ पकड़ के देख।" शेर चीते के पीछे दौड़ा। चीते की रफ्तार तेज़ थी। शेर उसे पकड़ न सका। तीन बार और रेस लगी। तीनों बार चीता जीती। हम भी चीते की टीम के साथ थे, सो खुश हुए कि एक बार फिर चीता और उसके दो बच्चे अपनी जान बचा पाए। पर एक बार फिर उनका किया शिकार उनके मुँह से निकल गया था।

अब धीरे-धीरे उस शेर के सातों साथी भी आ गए। मृत हिरन की बू उन तक पहुँच गई थी और वे उस ओर बढ़ रहे थे। एक शेर जो आगे था उसने हिरन को उठाया और चल पड़ा। पीछे-पीछे बाकी शेर भी चले मगर शिकार सिर्फ एक शेर ने खाया। मैंने मन में सोचा कि वैसे तो शेरों का ये एक समूह है, पर खाना एक शेर अकेले खा रहा है? ये कैसी रिश्तेदारी और दोस्ती है?

चन्द घण्टों में हमने जंगल के तथाकथित राजाओं को एक ही चीते के शिकार को दो बार सीनाज़ोरी करके हथियाते देखा। इंसानों के लिए जिसकी लाठी उसकी भैंस होती है। यहाँ जंगल में, जो बड़ा और ताकतवर, शिकार उसी का, चाहे मारा किसी ने भी हो। न इंसानों का यह रवैया हमें पसन्द है और न इन शेरों का, पर हमारी पसन्द ना पसन्द से दुनिया कहाँ चलती है?

आठ शेर और एक अकेला जंगली भैंसा

अपनी पेट-पूजा कर जंगल के राजा (या जंगल के दादा), आराम फरमाने लगे। चूँकि इन्हें हम कम देख पाते हैं, इनके कुछ और कारनामे देखने हम वहीं रुक गए। कुछ दूर एक बड़े सींगोंवाला जंगली भैंसा घास चर रहा था। जंगली भैंसे काफी ताकतवर होते हैं इसलिए शेर भी इनसे पंगा नहीं लेते। मगर, एक शेर उठा और भैंसे की ओर चलने लगा। बिना बात के पंगा लेना कोई इन नरों में देखे! बच्चों को

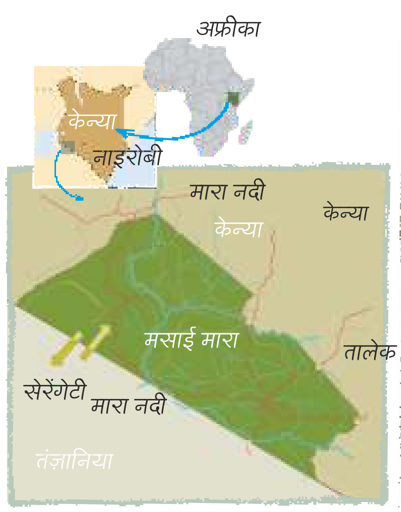

पालने की तो कोई ज़िम्मेदारी ये लेते नहीं हैं। इन्हें तो बस अपने खाने का इन्तज़ाम करना है। आराम करना है और बिना बात के पंगे लेने हैं। नर हाथी तो बच्चा होते ही हथिनी और बच्चे को छोड़कर नर हाथियों की टोली में चला जाता है। नर शेर भी अपने बच्चों से दूर रहते हैं। बच्चों का पेट भरने, उन्हें जीने के सब गुर सिखाने की ज़िम्मेदारी माँओं पर होती है। शेरनियाँ दो-तीन साल तक बच्चों को पालती हैं। अपने आप जीवन जीने लायक बनाती हैं और फिर आज़ाद कर देती हैं। एक बच्चे या बच्चों को बड़ा करने के बाद ही वे अगला बच्चा पैदा करती हैं।

चलो वापिस चलते हैं उस एक शेर और भैंसे की तरफ। दोनों 10-12 फुट की दूरी से एक-दूसरे को देख रहे थे। फिर एक-एक कर बाकी के सात शेर भी वहाँ आ गए और भैंसे को घेरकर बैठ गए। पैंतरेबाज़ी चालू थी। अगर कोई शेर भैंसे की ओर जाता था तो भैंसा भी शेर की ओर बढ़ने लगता था। शेर पीछे हट जाता था। उस बेचारे भैंसे को घेरकर खुद ये शेर आराम से बैठे थे। कोई-कोई एक-दूसरे को चाट रहे थे। कोई उबासी ले रहा था। इसे कहते हैं शान्त शिकार या बेकार का पंगा। मिनट घण्टों में बदल गए। बीना के कैमरे चलते रहे। कई और गाड़ियाँ आकर यह नज़ारा देखती रहीं। शेर बैठे थे, भैंसा मुकाबले के लिए तैयार खड़ा था। जब कोई शेर भैंसे की तरफ जाता तो भैंसा निडर शेर की तरफ बढ़ता था। शेर वापिस आ जाता था। अन्त में शेरों को पता चल गया कि भैंसा उनकी दाल नहीं गलने देगा और वो धीरे-धीरे, मुँह लटकाकर चले गए। हमने ज़ोर से नारा लगाया – भैंसे जी की जय।

सब दिखे पर तेन्दुए नहीं, तो कैसे घर जाएँ?

मसाईमारा हम पाँच दिन छह रातों के लिए आए थे। पाँचों दिन खतम हो गए थे और अगले दिन हमें वापिस जाना था। कितनी तेज़ी से ये दिन गुज़रे थे। मगर मेरी बहन का दिल और माँग रहा था। बीना ने अपनी एक ख्वाहिश ज़ाहिर की, “मेरा तो दिल नहीं है कल जाने का और अभी तक तेन्दुए भी नहीं दिखे हैं।” फ्रांसिस, जो शायद हमें पसन्द करने लगा था, उसने खुश होकर कहा, “मैं आपकी जहाज़ की और टेंट की बुकिंग बढ़ाने के लिए क्या मैं मैनेजर साहिब को फोन करूँ?” बीना ने झट हाँ कर दी। रात को जब कैम्प पहुँचे तो एक और रात-दिन रहने का हमारा इन्तज़ाम हो चुका था और हमारे जहाज़ की बुकिंग भी बदली जा चुकी थी।

अगले दिन हम फिर सात बजे के आसपास निकल पड़े। नाश्ता और दोपहर का खाना अपने साथ लेकर। जंगल में अलग-अलग जानवर, चिड़िया देखते रहे, खुश होते रहे पर बीना के मन में तेन्दुओं को देखने की इच्छा ज़ोरों पर थी। फ्रांसिस हमें उन इलाकों में ले जाते रहे जहाँ अकसर तेन्दुए दिखाई देते हैं। तेन्दुओं को ढूँढने के लिए नीचे और ऊपर दोनों जगह देखना पड़ता है। यही एक बड़ी बिल्ली है जो पेड़ों पर भी चढ़ती है। पर वे कहीं नहीं दिखे। हम हज़ारों जानवरों को नदी पार करते देखने मारा नदी एक बार फिर गए।

चार बज रहे थे और हमने कहा नहीं दिखे तेन्दुए तो नहीं सही, अब कैम्प वापिस चलते हैं और अगले दिन के सफर की तैयारी करते हैं। कुछ ही देर बाद हमने किसी खास जानवर की तलाश में दो जीपें देखीं। यहाँ सारे ड्राईवर और गाइड एक-दूसरे को जानते हैं, सो

फ्रांसिस ने पूछा, “क्या ढूँढा जा रहा है?” जवाब मिला तेन्दुआ और हमारी बाँछें खिल गईं। हमारी इच्छा पूरी होती लगती थी। कुछ ही देर में हमने देखा कि घास में बहुत ही धीरे-धीरे, घिसट-घिसटकर तेन्दुए का बच्चा आगे बढ़ रहा था। दो गाइडों को पता था कि माँ तेन्दुए ने एक अफ्रीकी बारहसिंगा मारा था और घसीट कर उसे पेड़ पर ले गई थी। वह शिकार अभी ऊपर ही लटक रहा था। ठीक से तेन्दुए को पेड़ पर चढ़ते देख पाने के लिए हम पेड़ की ओर चल पड़े। कुछ देर में वह बच्चा या बच्ची पेड़ के पास पहुँच गई और एक ही छलाँग में पेड़ पर चढ़ गई। हमने पहली बार इतने बड़े जानवर को यूँ पेड़ पर चढ़ते देखा था। वह शिकार को खाने लगी। बहुत ही होशियारी और हुनर से वह उस डाल पर सन्तुलन बनाकर खाना खा रही थी। सर्कस के कलाकारों जैसे कारनामे कर रही थी। सभी ने उनकी खूब तस्वीरें खींची।

हम सब माँ तेन्दुए का भी इन्तज़ार कर रहे थे क्योंकि उसका इस पेड़ पर देर सवेर आना तय था। तभी किसी ने कहा, “अरे, वहाँ तेन्दुआ बैठा है।” सब गाड़ियाँ भागीं उस तरफ। गिरे हुए सूखे पेड़ के मोटे तने पर माँ तेन्दुआ आराम कर रही थी। गाड़ियों की आवाज़ सुनी और ज़रा-सा सर ऊपर करके हालात का मुआयना किया। देखा और कोई नहीं, कमज़ोर इंसान हैं। और फिर से आँखें बन्द कर लीं। ताकतवर जानवरों की नज़र में इंसान कोई खास जन्तु नहीं है। इनकी भी खूब फोटो खींचीं। माँ तेन्दुए को भी पेड़ पर चढ़ते और वहाँ भोजन करते देखने की हमारी बहुत इच्छा थी। लेकिन उनकी वहाँ जाने की कोई मंशा नज़र नहीं आ रही थी। साढ़े छह बज रहे थे यानी जंगल से निकलने का समय हो रहा है। बड़े बेमन से हम वहाँ से निकले। तेन्दुओं के दर्शन ने हमें खुश कर दिया था।

हम कैम्प वापिस आए। सब के साथ रात का भोजन किया, अपने-अपने अनुभव बताए और चैन की नींद सो गए।

अगले दिन सुबह हम फिर से एक छोटे जहाज़ में उड़कर नाइरोबी पहुँच गए। मसाईमारा लाने के लिए मैंने मन ही मन बीना का शुक्रिया अदा किया। मसाईमारा से हर रात हम उस दिन के अनुभवों और तस्वीरों को फेसबुक पर अपने दोस्तों को भेजते थे। इस तरह हमारे साथ-साथ हमारे दोस्तों ने भी मसाईमारा की यात्रा का मज़ा लिया। उम्मीद है हमारे अनुभव पढ़कर और बीना की तस्वीरें देखकर तुमको भी मज़ा आया होगा!

चित्रः अतनु राय

एक था हाजी एक था नाजी

स्वयं प्रकाश

नाजी फफ्फस और हाजी सूकड़ा पुराने दोस्त थे। दोनों ने साथ-साथ इंजीनियरिंग की पढ़ाई की थी, साथ-साथ एमबीए किया था, साथ-साथ एक स्टार्टअप कम्पनी खोली थी और पिछले पाँच साल में खूब पैसा कमा लिया था। दोनों में से किसी की शादी नहीं हुई थी। दोनों एक शानदार शहर के शानदार फ्लैट में साथ-साथ रहते थे।

एक रात नाजी फफ्फस को घर में कुछ खटपट की आवाज़ सुनाई दी। हुआ यह था कि एक चोर उनके घर में घुस आया था और इधर-उधर माल ढूँढने में लगा था।

नाजी फफ्फस ने अपने रिमोट से सारे घर की लाइटें जला दीं, म्यूज़िक सिस्टम ऑन कर दिया, टीवी भी चला दी और माइक ऑन करके मोबाइल की कॉलर ट्यून भी बजा दी।

यह नज़ारा देखकर चोर तो एकदम हड़बड़ा गया। उस बेचारे ने इतने टेक्निकल लोगों के घर में कभी चोरी नहीं की थी।

नाजी फफ्फस ने चोर को पीछे से दबोच लिया। उसे ज़मीन पर पटककर उसके ऊपर बैठ गया और हाजी सूकड़ा से बोला, "बडी! फौरन जा और पास के थाने से किसी पुलिसवाले को पकड़कर ले आ। तब तक मैं इसे सम्हालता हूँ।"

दस मिनट हो गए। हाजी के निकलने की आवाज़ नहीं आई तो नाजी ने पूछा, "बडी! तू गया नहीं अभी तक?"

हाजी सूकड़ा मिमियाते हुए बोला, "यार, मेरी चप्पल नहीं मिल रही है।"

तभी चोर कराहते हुए बोला, "भाईसाहब! आप मेरी चप्पल पहन जाओ!"

बोलीरंगोली

भूख लगी है चाँद तोड़ के फ्राई कर लें
सूरज अण्डा छोड़ गया है ट्राई कर लें
- गुलज़ार

– कीर्ति कुमारी, पाँचवीं,
बिहार बाल भवन किलकारी,
पटना

गुलज़ार साब की इस कविता पंक्ति पर तुम्हारे सैकड़ों चित्र मिले। गुलज़ार साब के पसन्दीदा छह चित्र यहाँ पेश हैं। इन्हें भेजने वाले चित्रकारों को उपहार में चकमक डायरी अथवा किताबें भेजी जा रही हैं।

दीपाली हालदार, सातवीं, आनन्द विहार स्कूल, भोपाल

निहारिका गुप्ता, सातवीं, सनसिटी स्कूल, गुड़गाँव

भूख लगी है चाँद तोड़
के फ्राई कर लें
सूरज अण्डा छोड़ गया
है ट्राई कर लें

- गुलज़ार

जनवरी की कविता सुनो -

दो पैसे में धूप का ताप
चार आने की बारिश
मैं मौसम बेचता हूँ...
मैं मौसम बेचता हूँ।

- गुलज़ार

रुद्रान्क बसन्त, आठवीं, डी.पी.एस. पटना

मुस्कान शेख, सातवीं,
आनन्द विहार स्कूल, भोपाल

दिशा दीपक अग्रवाल, छठी, डी.पी.एस. सूरत

हो सकता है बड़े तुम्हें इसके अर्थ बताएँ। उनके अर्थ सुनो-समझो पर चित्र अपने मन का ही बनाओ...। कोशिश करना कि तुम्हारा चित्र हमें 10 दिसम्बर तक मिल जाएँ। चित्र के साथ अपना पता, कक्षा, फोन नम्बर ज़रूर लिखना। पता है -

चकमक,
एकलव्य,
ई-10, शंकर नगर,
शिवाजी नगर,
भोपाल -16
(फोन -09425010115)
चाहो तो ईमेल कर दो
chakmak@eklavya.in

बोलीरंगोली

इनायत, पाँचवीं,
डी.पी.एस. लुधियाना

कृष शॉ, चौथी,
आदर्श हिन्दी
हाई स्कूल,
कोलकाता

सत्यम मिश्रा, तीसरी, आनन्द विहार स्कूल, भोपाल

सुहाना, आठ साल, रागिनी समूह, दिगन्तर, जयपुर

सृष्टि आनन्द, चौथी, डी.पी.एस. पटना

समीक्षा एस. घरमालकर, छठी, डी.पी.एस. पुणे

माथापच्ची

1 किसी शहर से एक बस रवाना होती है। बस में महिलाओं की संख्या पुरुषों की संख्या की आधी है। अगले शहर में बस से 10 पुरुष उतर जाते हैं और 5 महिलाएँ चढ़ जाती हैं। अब बस में पुरुषों व महिलाओं की संख्या बराबर हो जाती है। क्या तुम बता सकते हो कि शुरुआत में बस में कुल कितनी सवारियाँ थीं?

2 एक चौकोर बगीचे के चारों ओर बने 8 घरों में कुल 36 लोग रहते हैं। हर घर में रहनेवालों की संख्या अलग-अलग है। यदि तीन घरोंवाली हरेक पंक्ति में रहनेवालों की संख्या 15 हो तो हर घर में रहनेवालों की संख्या बताओ?

3

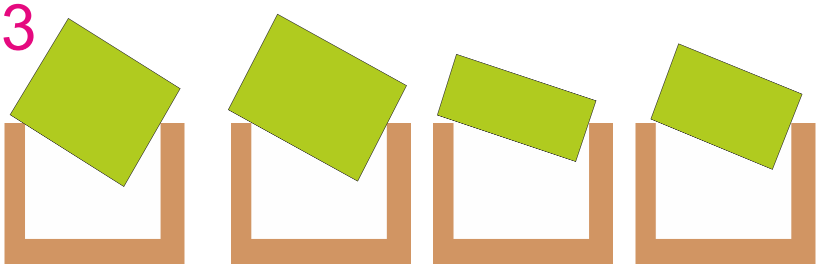

इनमें से कोई एक ही ब्लॉक फ्रेम में फिट बैठेगा। तुम बता सकते हो कौन-सा?

4 एक डकैती में बहुत सारा सामान लूटा गया। डकैत सारा सामान ट्रक में लेकर भाग गए। पुलिस इस डकैती के बारे में फिलहाल इतना ही पता लगा पाई है कि डकैती में अ, ब और स के अलावा अन्य कोई शामिल नहीं था। 'स' 'अ' की अनुमति के बिना कोई अपराध नहीं करता। 'ब' को गाड़ी चलाना नहीं आता। इस जानकारी के आधार पर 'अ' अपराधी होगा या नहीं?

5 साइकिल चलाने में शुरुआत में अधिक ज़ोर क्यों लगाना होता है?

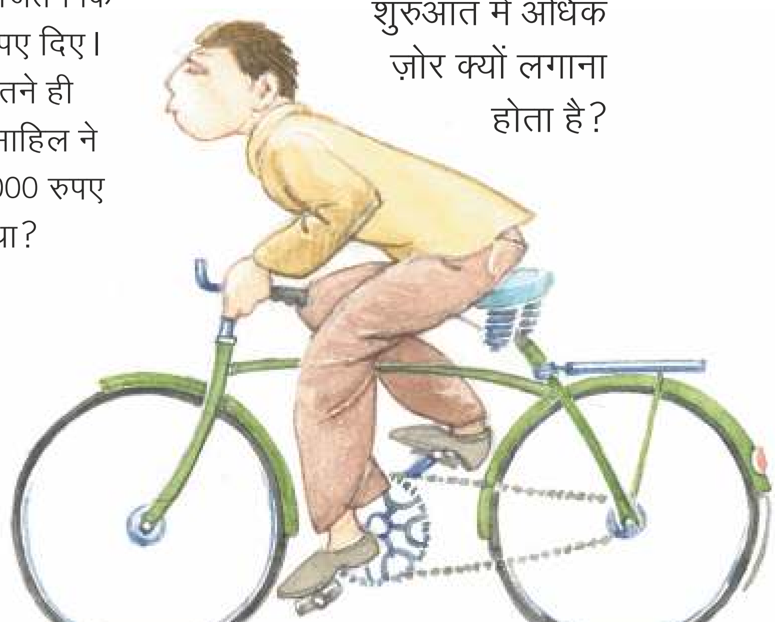

चित्रः दिलीप चिंचालकर

6 साहिल कुछ रुपए लेकर घर से निकला। पहले वो बड़ी बहन के घर गया। बहन ने उसे बिना बताए उसके पर्स में उतने ही रुपए और रख दिए जितने कि जेब में पहले से थे। वहाँ से जाते हुए उसने बहन को 2000 रुपए दिए। फिर बीचवाली बहन के घर गया। बीचवाली बहन ने भी बिना बताए उसकी जेब में उतने ही रुपए और रख दिए जितने कि पहले से जेब में थे। जाते समय साहिल ने उसे भी 2000 रुपए दिए। छोटी बहन ने भी उसे बिना बताए चुपचाप उसकी जेब में उतने ही रुपए और रख दिए जितने जेब में पहले से थे। लौटते हुए साहिल ने उसे भी 2000 रुपए दिए। घर पहुँचने पर उसकी जेब में 5000 रुपए थे। अब बताओ कि वह घर से कितने रुपए लेकर निकला था?

परिवार हरा हम भी हरे
एक थैली में तीन-चार भरे (मटर)

दिन में सोए रात में रोए
जितना रोए उतना खोए (मोमबत्ती)

7 मोबाइल फोन या दरवाज़े की घण्टी बजने पर टीवी की तस्वीर में कुछ गड़बड़ी होती है? भला क्यों?

दूसरी किस्त

नाचघर

प्रियम्वद

लिल्ली घोड़ी और सगीर का नाच हवाओं में तैरता हुआ दरगाह के गुम्बद, मिल की चिमनी, कोतवाली की घड़ी को पार कर गया। नाचघर की छत पर पहुँचकर वह ठहर गया। सालों से वीरान, सोया हुआ नाचघर इस पहचानी लय, ताल और धमक से चौंककर जाग गया। कुछ देर उसने ऊँघते हुए अपने चारों ओर फैले सन्नाटे और मकड़ी के धूल भरे जालों को देखा फिर सो गया।

नाचघर की छत पर मोहसिन की बादशाहत थी। छत पर जाने के लिए कोई सीढ़ी नहीं थी। यतीमखाने की छत से तीन और छतें पार करके मोहसिन नाचघर की छत पर पहुँच जाता था। दूसरा कोई वहाँ नहीं पहुँच सकता था इसलिए छत पर मोहसिन का साम्राज्य था। छत बड़ी थी। बहुत पुरानी थी। मोहसिन को अपने घर से ज़्यादा अच्छी यह छत लगती थी। जब कभी वह ऊबता या उदास होता या छत पर कटी हुई पतंगें गिरतीं, तब वह छत पर आता। छत के किसी भी कँगूरे के अन्दर बैठा हुआ घण्टों तक, कोतवाली की घड़ी देखता। लाल इमली की पत्थर की चिमनी में डूबता सूरज देखता। गंगा पार करती नावें, खेतों से लौटते तोते, चमकदार नीले आसमान को देखता।

खण्डहर हो चुके नाचघर के बड़े हॉल के ऊपर छत बनी थी, बिलकुल सपाट, चौड़ी और लम्बी। हॉल के चारों ओर के गलियारे और कमरों पर भी छत थी, पर वह इस छत से नीची थी। इस तरह यह छत दो मंज़िला थी। छत की ऊपरी मंज़िल पर रोशनदान बने थे। इनसे हॉल के अन्दर रोशनी, हवा जाती थी। कई बार मोहसिन जब देर तक ऊबा बैठा रहता, तब अकसर इन रोशनदानों से अन्दर झाँक लेता था। अन्दर का बहुत पुराना, बड़ा, खूबसूरत हॉल टुकड़ों में दिखता था। उसकी सीलन भरी दीवारें, नाचने के लिए लकड़ी का फर्श, किनारों पर बैठने के लिए आधे गोले वाली बालकनी, रेशमी पर्दे, बड़े शमादान, फानूस के खाली स्टैंड, दीवारों पर पेंटिंग्स, पेंटिंग्स पर धूल, मकड़ी के जाले सब दिखते थे।

दो सौ साल से ज़्यादा पुरानी इमारत पर अब सब ओर से ताले लगे थे। इसके मालिक कहीं इंग्लैंड में थे। पर अँग्रेज़ों के समय उनके पूर्वज शहर में रहते थे। तब यह शहर की सबसे खूबसूरत इमारत थी। शाम को जब इसकी रोशनियाँ जलतीं, सड़कों पर इत्रवाला पानी छिड़का जाता, बग्घी, पालकियों पर अँग्रेज़ औरतें आदमी आते, अन्दर के बाजों की धुन पर थिरकते जोड़ों की आवाज़ें बाहर आतीं, तब लोग दूर झुण्ड बनाकर इसे देखा करते। यहाँ हमेशा तरह-तरह का नाच होता। इतना ज़्यादा "नाच" होता था कि लोगों ने इसका नाम "नाचघर" रख दिया था।

एक दिन मोहसिन ने रोशनदान से झाँका तो दंग रह गया। हॉल के अन्दर एक लड़की घूम रही थी। लड़की हलके नीले रंग का फ्रॉक पहने थी। दो चोटियों पर लाल रंग के रिबन से फूल बने थे। पाँवों में सुनहरे रंग के सैंडिल थे। ऐसा नीला रंग मोहसिन ने आसमान का देखा था। ऐसा लाल रंग डूबते सूरज से चिमनी के चारों ओर बने घेरों में देखा था। ऐसी सुनहरी सैंडिल सिन्ड्रेला पहनती थी।

"ऐ" मोहसिन रोशनदान से चिल्लाया। लड़की सकपका गई। उसने ऊपर देखा। रोशनदान के अन्दर मोहसिन का सर घुसा था।

"कौन हो तुम?" मोहसिन ने पूछा।

"तुम कौन हो?" लड़की ने पूछा।

"यह मेरी छत है।" मोहसिन ने कहा।

"यह मेरा हॉल है।" लड़की ने कहा।

मोहसिन चुप हो गया।

"क्या कर रही हो?" कुछ देर बाद मोहसिन बोला

"देख रही हूँ..."

"पहली बार देख रही हो?"

"हाँ"

"मैं रोज़ देखता हूँ।" अब मोहसिन की आवाज़ में शान थी।

"तुम कौन हो?" लड़की ने पूछा

"मोहसिन..." मोहसिन मुस्कराया

"तुम कौन हो?"

"लाजवन्ती" लड़की भी मुस्कराई। कुछ क्षण बाद बोली, "तुम तो मुसल्ले हो।"

"तुम भी तो काफिर हो।" मोहसिन को गुस्सा आ गया। वह रोशनदान से हट गया। छत की दीवार से पीठ टिकाकर बैठ गया। सामने देखा उसने। आसमान नीला था, वैसा जैसी लड़की की फ्रॉक थी। चिमनी के पास डूबते सूरज का सुर्ख रंग जमा हो रहा था, वैसा, जैसा लड़की के रिबन के फूलों में था। मोहसिन ने फिर रोशनदान के अन्दर सर घुसेड़ दिया! लड़की कोने में रखे टूटे पियानो पर हाथ फेर रही थी।

"मत छुओ।" मोहसिन ऊपर से चिल्लाया। लड़की ने सर उठाकर देखा।

"क्यों?"

मोहसिन कुछ नहीं बोला।

"मेरा हॉल है। मैं हर चीज़ छू सकती हूँ।" लड़की ने मोहसिन की सीमा समझ ली थी। मोहसिन ने भी समझ लिया था लड़की की ताकत ज़्यादा बड़ी है। वह हॉल के अन्दर घूम सकती थी। वह सब छू सकती थी जिसे मोहसिन छत से सिर्फ देख सकता था।

"मैं भी आ जाऊँ?" मोहसिन ने आवाज़ नरम करके पूछा। लड़की ने एक क्षण सोचा।

"कहाँ से आओगे?"

"तुम कहाँ से आती हो?"

"अपने घर से। मेरे घर की पुरानी सीढ़ियाँ यहाँ उतरती हैं।"

"तुम्हारे घर से आ जाऊँ?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"तुम मुसल्ले हो।" लड़की एक क्षण चुप रहकर बोली,

"जहन्नुम में जाओ।" मोहसिन गुर्राया। उसने सर वापस खींच लिया।

चित्रः प्रशान्त सोनी

"सुनो," लड़की ने उसे रोका, "तुम इधर से ही आ जाओ।"

"कैसे?" मोहसिन ने फिर सर रोशनदान में घुसेड़ दिया।

"यहाँ एक पहिएदार सीढ़ी है। मैं दीवार से लगा देती हूँ।"

"ठीक है।" मोहसिन ने सर हिलाया।

लड़की अन्दर कहीं चली गई। कुछ ही देर बाद मोहसिन ने एक सीढ़ी देखी। लड़की पूरी ताकत से उसे ढकेल रही थी। सीढ़ी के पहिए जाम हो चुके थे। वह किसी तरह उसे खिसका भर पा रही थी, "आ जाओ।" उसने सर उठाकर कहा। वह हाँफ रही थी। उसका चेहरा लाल हो गया था। उस पर पसीने की बूँदें थीं। वह गहरी साँसें ले रही थी। मोहसिन अन्दर हथेलियाँ रखकर रोशनदान से उतर गया। फिर उसने रोशनदान की चौखट के कोने पर लगी घिर्रियों को पकड़ा और लटक गया। उसके पैर हवा में झूल रहे थे। सीढ़ी से काफी ऊपर थे।

"कूद जाओ।" लड़की नीचे से बोली, "मैं सीढ़ी पकड़े हूँ।"

मोहसिन ने हाथ छोड़ दिए। वह धम्म से सीढ़ी के चौकोर प्लेटफॉर्म पर गिर गया। चढ़ने-उतरने के लिए डण्डे लगे थे। मोहसिन नीचे उतर आया। अब वह लड़की के बिलकुल पास था। इतने पास कि सब देख सकता था। उसकी आँखों की काँपती चमक वैसी ही थी जैसी मोहसिन ने अकसर मन्दिर की आरती की जलती लौ में देखी थी। उसके साँवले रंग के नीचे की लाली शहतूत जैसी थी।

अब मोहसिन ने हॉल के बाहर देखा। दरवाज़ों के पार गलियारा था। गलियारे के बाद कुछ कमरे बने थे।

"उधर क्या है?" मोहसिन ने इशारा किया।

"पता नहीं, अँधेरा है।" लड़की ने कहा।

"चलो देखते हैं।" मोहसिन ने कहा। लड़की ने उसका हाथ पकड़ लिया। दोनों गलियारे में आए। गलियारा चौड़ा था। दीवारों पर नाचते हुए जोड़ों की पेंटिंग्स लगी थीं। वे हर देश के लोग थे। हर तरह की, हर रंग की पोशाकों में, जोड़ों में, झुण्ड में या अकेले नाच रहे थे। उनके पँजे उठे थे। बदन फूलों की शाख की तरह लचक रहे थे। वे हर तरह का नाच नाच रहे थे। पोलका, रम्बा, सैल्सा, बोलेरो, कैनकैन, मजका, जीग, ऐलमैंड। उनके चेहरों पर चमक थी। उल्लास था। आनन्द था। उन्माद और गति थी।

गलियारे से वे दोनों अन्दर के बड़े कमरे में आए। वहाँ पुराना सामान पड़ा था। पियानो, बैगपाइप, बैन्जो पड़ा था। एक ड्रम था। कुछ कुर्सियाँ पड़ी थीं। एक खाली क्रॉस पड़ा था। कोने में लोहे के दो सन्दूक थे। लाल रेशम का पर्दा, टूटे हुए शमादान थे। कमरे में सीलन की गन्ध थी। मरे हुए चूहे जैसी। साँस रोकती हुई। लड़की ने मोहसिन का हाथ खींचा। दोनों बाहर आ गए। गलियारे में आकर लड़की पेंटिंग्स के पास रुकी। उसने नाचते हुए जोड़ों को देखा।

"चलो नाचें।" उसने मोहसिन से कहा। अब वे दोनों हॉल के अन्दर वापस आ गए थे। लड़की ने मोहसिन का हाथ छोड़ दिया।

"मुझे नाचना नहीं आता।" मोहसिन ने कहा।

"नाचने में क्या है?" लड़की हँसी। उसने बदन लहराया। हाथ लहराए। दो कदम आगे दो कदम पीछे ठुमकी। उसका शरीर लय में था।

"यह नाच है?" मोहसिन हँसा, "यह तो मैं भी नाच सकता हूँ।" मोहसिन ने भी बदन लहराया। दोनों लहराने लगे। उनकी गति बढ़ने लगी। उनकी हँसी भी। लय भी। लकड़ी के फर्श पर लड़की ने सुनहरी सैंडिल से पाँवों की थपकी दी। फर्श से लय में आवाज़ आई। तक धिन धिन धिन ताक...ताक...ताक...। अब उसके पँजे, एड़ी थपकी दे रहे थे। हाथ हवा में लहरा रहे थे। मोहसिन ने भी यही किया। दोनों नाच रहे थे। हँसी से, खुशी से, चेहरा दमक रहा था।

"अब पेंटिंग्स की तरह नाचें।" मोहसिन ने हाथ बढ़ाया। लड़की ने एक हथेली मोहसिन की हथेली पर रखी। दूसरी उसके कन्धे पर। मोहसिन ने दूसरी हथेली बढ़ाकर उसकी कमर को घेर लिया। अब वे एक दूसरे से चिपके, आगे पीछे, घेरे में, लय में घूम रहे थे।

"कल फिर आओगी?" मोहसिन ने नाचते हुए पूछा।

"हाँ।" लड़की ने नाचते हुए कहा।

हॉल के अन्दर हलका अँधेरा हो गया। मोहसिन को लड़की के चेहरे की लाली दिखना बन्द हो गई।

बस कुछ देर बाद लड़की ने कहा। उसने गहरी साँस ली। मोहसिन के कन्धे से और हथेली से हाथ हटा लिए। दोनों कुछ देर हँसते हुए साँस लेते रहे।

"अब रात होनेवाली है।" कुछ देर बाद मोहसिन ने कहा। वापस जाने के लिए वह सीढ़ी पर आया। ऊपर चढ़ा। प्लेटफॉर्म पर खड़ा हुआ। रोशनदान उसके हाथों से दो फीट ऊपर था। उसने लड़की को देखा।

"क्या हुआ?" लड़की ने पूछा

"ऊँचा है।"

"फिर?"

मोहसिन दो बार उछला। रोशनदान हाथों से दूर था। वह नीचे उतर आया।

"अब?" उसने लड़की को देखा, "तुम किधर से जाओगी?"

"मेरे आँगन से ये सीढ़ियाँ नीचे आती हैं। वहाँ दरवाज़ा बन्द रहता था। आज धकेलने से बीच की ज़ंजीर ढीली हो गई। दरवाज़े की जगह से मैं निकल आई। वहीं से वापस जाऊँगी।"

"तब तो मैं तुम्हारे घर से बाहर निकल सकता हूँ।"

लड़की ने सर हिला दिया, "नहीं... तुम मुसल्ले हो।"

अँधेरा अब बढ़ गया था। रोशनदान से अज़ान की आवाज़ फड़फड़ाती हुई अन्दर आई। मोहसिन उदास हो गया। उसकी अम्मी उसे ज़रूर ढूँढ रही होंगी। लड़की ने मोहसिन की उदासी देखी।

(शेष भाग पेज 44 पर)

जानवर सोते कैसे होंगे?

विनता विश्वनाथन

यूनिवर्सिटी के कुछ दोस्तों के साथ घूमते-घामते मैं पश्चिमी घाट की अगस्त्यमलई पहाड़ियों में आ पहुँची थी। हम कन्याकुमारी से कोई 100-120 किलोमीटर दूर कारैयार और सेर्वलार नदियों के संगम पर बने गैस्ट हाउस में रुके थे। जगह का नाम मुंडन्तुरई था। रात को साम्बार-रसम-चावल के साथ खानसामे ने कई कहानियाँ भी सुनाईं। जगह के नाम कैसे पड़े इसके कई किस्से थे। संगम के आसपास कभी कुछ लोगों ने एक पादरी का सिर काट दिया था। कहते हैं कि उनका सिरकटा भूत आज भी रातों को गैस्ट हाउस का दरवाज़ा खटखटाता है। सोते हुए लोगों को जगाकर भूत को क्या मिलता होगा, पता नहीं! खैर, पर उस रात हम सबको पानी में कुछ गिरने की आवाज़ें दो-चार बार सुनाई दीं। शायद भूत से मिलने की इच्छा हम में से किसी को नहीं थी इसलिए कोई नहीं उठा।

सुबह मुंडन्तुरई में रुके वैज्ञानिक राउफ से बात हुई। राउफ ने वहाँ कई साल बॉनेट बन्दरों पर शोध किया है। बॉनेट मंकी लाल बन्दरों से कुछ छोटे होते हैं और उनके सिर के बाल एक बॉनेट या टोपी जैसे दिखते हैं। राउफ ने बताया कि गैस्ट हाउस के ठीक सामने एक विशाल पेड़ पर बॉनेट मंकी का एक झुण्ड सोता है। नदी पर झुकी डाल पर सोते-सोते अकसर उनमें से कोई पानी में गिर जाता है। फिर तैरकर लौटता है और पेड़ पर चढ़कर सो जाता है। यह एक आम बात थी। उस दिन पता चला कि बन्दर अपने भाई-बहन-बन्धुओं के साथ सोते हैं, इकट्ठे। एक-दूसरे पर टिके हुए जैसे भरी ट्रेन में बैठे लोग सोते हैं। वे नदी किनारे के पेड़ों पर सोना इसलिए पसन्द करते हैं क्योंकि अँधेरे में कोई तेन्दुआ चुपचाप उन तक पहुँच भी जाए तो पानी में कूदकर वे अपना बचाव कर सकें।

मैंने यह किस्सा अपने एक दोस्त को सुनाया तो जानवरों की सोने की आदतों पर बातचीत शुरू हो गई। कई सवाल थे हमारे – दूसरे जानवर कैसे सोते होंगे? उनके बिस्तर कैसे होते हैं? वे बन्दरों की तरह खुले में सोते हैं या कहीं छिपकर? क्या सभी जानवर सोते हैं?

पढ़ने-पूछने पर पता चला कि आमतौर पर सभी स्तनधारी जानवर और पक्षी सोते हैं और रोज़ सोते हैं। लेकिन इनके सोने की आदतें एक-दूसरे से काफी अलग हैं। जैसे, जिराफ दिन में कुल मिलाकर आधा घण्टा ही सोते हैं और घोड़ों और हाथियों की तरह खड़े-खड़े सोते हैं (वैसे हमारे एक साथी भी खड़े-खड़े सो सकते हैं, उछलती-चलती बस में भी!)। मुझे तो लगता था कि बिल्लियाँ सबसे ज़्यादा सोती होंगी क्योंकि घर की बिल्लियाँ 18 घण्टे तक सोती हैं। पर पता चला कि एक प्रजाति के चमगादड़ दिन में 20 घण्टे तक सोते हैं, और वो भी उलटा लटके हुए!

इसी तरह सभी पक्षी भी सोते हैं। दिन में खाने-पीने-साथी की तलाश में व्यस्त रहने के बाद सूरज ढलने के साथ ही वे सो जाते हैं। और सुबह आकाश में हलका-सा उजाला होते ही उठ जाते हैं। रात को सक्रिय जीव, जैसे उल्लू, दिन में सोते हैं। अपनी एक टाँग को मोड़कर वे अपने शरीर के नीचे दबा देते हैं। और दूसरी टाँग पर बैठकर सोते हैं। ऐसे सोते हुए वे डाल से कभी गिरते भी नहीं हैं! ऐसा इसलिए कि जब पक्षी बैठ जाते हैं तो उनके पैरों की उँगलियाँ डाल पर लॉक-सी हो जाती हैं। जब तक पक्षी खड़े नहीं होते वो डाल से अलग नहीं हो सकते हैं। कुछ पक्षी, जैसे फ्लैमिंगो घोड़ों की तरह खड़े-खड़े सोते हैं – खारे पानी में रहनेवाले ये पक्षी आखिर बैठ भी कहाँ पाएँगे...। कुछ मुरगाबी पक्षी पानी पर सोते हैं या पानी के किनारे ज़मीन पर या किसी डाल पर सोते हैं। ये भी एक टाँग पर बैठकर सोते हैं।

आम तौर पर सामूहिक जानवर
समूहों में सोते हैं,
कभी एक-दूसरे से चिपककर,
तो कभी कुछ दूरी पर।

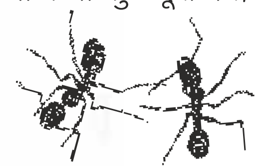

चित्र : दिलीप चिंचालकर

पक्षियों के लिए सोते समय सबसे बड़ी चुनौती होती है किसी जानवर का आहार न बनना। इसके लिए एक तरीका जो उन्होंने अपनाया है वो है एक ऐसी नींद जिसमें उनके मस्तिष्क का आधा हिस्सा सोता है और आधा जगा रहता है। इस तरह वह एक साथ कई काम करते हैं। जैसे, कुछ बतख एक आँख खोलकर सोती हैं और उनका सोना, तैरना, निगरानी रखना साथ-साथ होता है। कई प्रवासी पक्षी लम्बी उड़ान भरते समय ऐसे ही थोड़ा आराम कर लेते हैं!

आमतौर पर समूह में रहनेवाले जानवर समूहों में सोते हैं, कभी एक-दूसरे से चिपककर, तो कभी कुछ दूरी पर। लेकिन बिस्तर या घोंसला बनाकर सोना कम ही होता है। कुछ प्राइमेट जैसे चिम्पान्ज़ी और ओरैंगुटैन पत्ते, घास या डालियों को मोड़कर बिस्तर बनाकर सोते हैं। ओरैंगुटैन तो अकसर तकिया और ओढ़ने के लिए भी बनाते हैं। आमतौर पर पक्षी अपने बच्चों को पालने के लिए घोंसला बनाते हैं। इनमें से ज़्यादातर किसी घनी झाड़ी या पेड़ में छिपकर सोते हैं। बहुत कम पक्षी हैं, जैसे सोशियबल वीवर बर्ड और मुर्गी जो घोंसलों में सोते हैं।

अब कुछ और जानवरों के सोने को भी देख लें! कीट सोते हैं, यह हम जानते हैं। लेकिन मछलियाँ-मेंढक दिन का कुछ समय सुस्ती में बिताते हैं, अब उसे नींद कहा जा सकता है या नहीं यह तो वैज्ञानिक भी समझ नहीं पाए हैं। खैर, यह चर्चा तो बहुत लम्बी चल सकती है। तुमसे और बातें भी करनी हैं। राउफ ने हमें बन्दरों और दूसरे जानवरों तथा उन पर शोध करनेवाले वैज्ञानिकों के बारे में बहुत सारी मज़ेदार बातें सुनाईं। अगली बार हाथी का एक किस्सा सुनाऊँगी।

प्यारे भाई रामसहाय

स्वयं प्रकाश

चित्रः अतनु राय

एक बार हमारा एनसीसी कैम्प मन्दसौर में लगा जिसके लिए हम ट्रेन से मन्दसौर गए। वह यात्रा खासी मज़ेदार और यादगार रही।

हुआ यह कि हमारे पीछे-पीछे एक पति-पत्नी डिब्बे में चढ़े। उनके साथ काफी सामान भी था। सामान तो चढ़ गया लेकिन कुली को पैसे देते समय जनाब अड़ गए कि पाँच रुपए से एक पैसा ज़्यादा नहीं देंगे, जबकि कुली दस रुपए माँग रहा था। कुली को भरमाने के लिए जनाब ने जेब से सौ रुपए का नोट निकाला कि लो, ले लो दस रुपए, तुम्हारे पास छुट्टे हों तो! पर कुली ने दो-चार कुलियों को पास बुलाकर किसी तरह सौ के छुट्टे भी हासिल कर लिए और सरकती हुई गाड़ी में जनाब को बाकी के पैसे पकड़ा दिए। जनाब ने गिने तो नब्बे! यानी कुली दस रुपए लेकर ही माना। जनाब का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया और वह न सिर्फ कुली को बल्कि उसकी पूरी कौम को ज़ोर-ज़ोर से कोसने लगे। उन्होंने कुली को चोर-डाकू-लुटेरे - जेबकतरे आदि जाने किस-किस उपाधि से विभूषित किया, कुछ और लोग भी उनकी हाँ में हाँ मिलाने लगे। ऐसा लग रहा था कि उनका बस चलता तो वह सारी दुनिया के कुलियों को लाइन से खड़ा करके शूट कर देते।

इस बीच उनका ढाई-तीन साल का बच्चा बिट्टू माँ की गोद से उतरकर दूसरे मुसाफिरों की गोद में पहुँच चुका था और थोड़ी ही देर में सारे डिब्बे का लाड़ला बन चुका था। हमारे दोस्तों को तो जैसे एक जीता-जागता खिलौना मिल गया था। वे बिट्टू से बार-बार

पूछते गाय कैसे बोलती है? कुत्ता कैसे भौंकता है? पापा कैसे गुस्सा होते हैं? वगैरह और हर बार बिट्टू ऐसे-ऐसे मुँह बनाता कि हमारा हँसते-हँसते बुरा हाल हो जाता। फिर पास के कूपेवाले उसे उठाकर ले गए और इस तरह वह पूरे डिब्बे के मुसाफिरों का मनोरंजन करता रहा।

लेकिन रतलाम स्टेशन पर एक विचित्र घटना हो गई।

रतलाम स्टेशन पर गाड़ी काफी देर रुकती है।

जनाब तो कुली प्रजाति के लोगों के प्रति अपनी पवित्र भावनाओं की अभिव्यक्ति करने में व्यस्त थे और उनका बेटा बिट्टू कभी इसके पास कभी उसके पास आ-जा रहा था। वह कभी खिड़की के बाहर से किसी को कुत्ते की आवाज़ सुनाता कभी खिड़की से बाहरवाले को गधे की आवाज़! करते-करते गाड़ी चलने का टाइम हो गया। अब जाकर जनाब को बिट्टू की याद आई। वह बिट्टू बिट्टू पुकारते हुए उसे को ढूँढने लगे। हरेक से पूछने लगे कि उन्होंने बिट्टू को देखा है क्या? हरेक ने यही जवाब दिया कि अभी-अभी तो यहीं था, खेल रहा था, देखिए कहीं बाहर तो नहीं उतर गया? गाड़ी चलनेवाली है! जब बिट्टू डिब्बे में कहीं नहीं मिला तो जनाब हड़बड़ा गए और उनकी आवाज़ रोने जैसी हो गई। कोई बोला, "पास के डिब्बे में तो नहीं चला गया??" राधेश्याम दाहिनी तरफ के डिब्बे की तरफ दौड़ा, बालकिशन बाईं तरफ के डिब्बे में और लश्करी प्लेटफॉर्म पर कूद पड़ा। सब बिट्टू को ढूँढने की कोशिश कर रहे थे लेकिन बिट्टू कहीं नहीं मिल रहा था। बिट्टू के पापा बदहवास इधर से उधर बिट्टू बिट्टू पुकारते फिर रहे थे। बिट्टू की मम्मी एकदम पगला गई थीं। आसपास की औरतें उन्हें सम्हालने और धीरज बँधाने लगीं कि बहन यहीं कहीं होगा बच्चा, अभी मिल जाएगा। एक बूढ़ा मुसाफिर पति-पत्नी दोनों को डाँटने लगा कि इत्ती देर से अपनी बकर-बकर में लगे थे, बच्चे का ध्यान क्यों नहीं रखा? आजकल बच्चे चुरानेवाले हर तरफ घूम रहे हैं। वे बच्चों को उठाकर ले जाते हैं और उनके हाथ-पैर तोड़कर उनसे भीख मँगवाते हैं!

बूढ़े की बातें सुनकर माँ और घबरा गई।

इस बीच इंजन ने सीटी दे दी। गार्ड ने हरी झण्डी दिखा दी। बिट्टू का कहीं पता नहीं चल रहा था। बिट्टू के माँ-बाप के लिए बड़ी उलझन की घड़ी थी। समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें? बिट्टू ट्रेन के भीतर है या बाहर? उतर जाएँ या बैठे रहें? यदि बैठे रहे और बिट्टू बाहर स्टेशन पर ही छूट गया तो? और यदि उतर गए और बिट्टू ट्रेन में ही हुआ तो?

(शेष भाग पेज 44 पर)

"ये बच्चा किसका है?"

चित्रः प्रशान्त सिंह, नवीं, विद्याज्ञान स्कूल, सीतापुर, उ. प्र.

कोहरा

उदयन वाजपेयी

वह किसी दिन अचानक तालाब के ऊपर हलकी नीली चादर-सा फहराता मिल सकता है। उसके नीचे पानी पर बेआवाज़ फिसलती डोंगी पर खड़े मछुआरे का सिर उसे चीरता चला जाता है। सूरज जैसे-जैसे ऊपर आसमान में चढ़ता है कोहरे की चादर फिसलती जाती है। और मानो पानी की लहरों में ही समा जाती है। कोहरे के रेशे सर्दियों और कभी-कभी बारिश के दिनों में पूरे शहर को घेर लेते हैं। मानो पूरा शहर ही किन्हीं बारीक धागों से ठसाठस भर गया हो जिनके बीच से गुज़रती कारों की बत्तियाँ फीकी पड़ जाती हैं। सब कुछ बादलों से ढँके चाँद-सा जान पड़ता है। एक बार दिल्ली की सर्दियों में मैं वहाँ गया था। कोहरे से पूरा शहर इस तरह ढँक गया था, चार फीट दूर का आदमी भी दिखाई नहीं देता था। लगता था कि हम अपने चलते पैरों की कैंची से कोहरे को काटकर आगे चल पा रहे हैं।

लगता तो यही है कि कोहरे के रेशे आसमान से गिरते हैं। पर रास्ते में अजीब वाक्या होता है। वे रेशे नीचे आने से पहले ही आपस में गुँथ जाते हैं। और नीचे ज़मीन पर गिरने की जगह ज़मीन के ऊपर ही टँगे रह जाते हैं। कई बार यह कोहरा चादर-सा महीन होता है पर कई बार ज़मीन से कई मीटर ऊपर तक भरा टँगा रहता है। ऐसे में बगीचे में टहलती माँ "माँ-जैसी" लगने लगती है, बहन "बहन-जैसी", दोस्त जो बड़ी दूर से हमसे मिलने आया होता है "दोस्त-जैसा" लगता है। अपना मुहल्ला "मुहल्ले-जैसा", अपना घर "घर-जैसा"। यहाँ तक कि अपना शहर "शहर-जैसा" लगने लगता है। मानो सारी पृथ्वी कुछ देर के लिए कोहरे से ढँकी "पृथ्वी-जैसी" हो गई हो। शायद ऐसे ही एक शहर में भटकते हुए एक जापानी ने कहा होगा–

क्योतो में–
मुझे क्योतो की
याद आ रही है

प्यारे भाई रामसहाय

(पेज 41 का शेष भाग)

गाड़ी रेंगने लगी। सारे डिब्बे में बिट्टू बिट्टू की चीख पुकार मची हुई थी। सबके होश उड़े हुए थे। तभी अचानक प्लेटफॉर्म से एक आवाज़ आई, "ये बच्चा किसका है?"

खिड़की से झाँककर देखा कि एक बूढ़ा-सा कुली अपने सिर पर एक रोते हुए बच्चे को बिठाए हर डिब्बे के आगे पूछता जा रहा है, "ये बच्चा किसका है?"

उसी समय हमारे साथ एन.सी.सी. कैम्प में जा रहा एक सीनियर लड़का दयाराम लपककर प्लेटफॉर्म पर कूदा कुली से बच्चे को लिया और दौड़ते हुए उछलकर चलती ट्रेन में चढ़ गया।

सबने रहत की साँस ली। सबने इस हिम्मत भरे काम के लिए दयाराम की पीठ थपथपाई।

ट्रेन चलने के थोड़ी देर बाद मैं टॉयलेट की तरफ गया तो देखा बिट्टू के पापा गलियारे की दीवार से सटे खड़े रो रहे हैं। उन्होंने बिट्टू को अपनी छाती से चिपका रखा है और उनके दोनों गाल आँसुओं से तरबतर हैं।

नाचघर

(पेज 37 का शेष भाग)

"एक काम करते हैं। तुम मुसलमान हो यह नाम से ही तो पता चलेगा। कोई मेरे घर में पूछे तो दूसरा नाम बता देना।"

"क्या?"

"मोहन।"

"ऐसे नहीं ... तुम भी अपना नाम बदलो – तब।"

"मैं क्यों?"

"कल तुम मेरे घर चलना। वहाँ भी सब काफिरों से मिलने से मना करते हैं।"

"ठीक है...।" लड़की हँसी, "क्या नाम रखोगे?"

मोहसिन ने लड़की को देखा। वह बहुत पास थी। मोहसिन ने नीला आकाश, चिमनियों के इर्द-गिर्द लाल बादलों के गुच्छे, शहतूत, दमपुख्त की केसर, आरती की लौ सब को एक साथ देखा।

"हुस्ना।" वह हँसा।

"ठीक है... चलो।" लड़की ने मोहसिन का हाथ पकड़ा।

हॉल के कोने से सँकरी, पथरीली सीढ़ियाँ ऊपर की ओर जा रही थीं। ऊपर एक छोटा दरवाज़ा था। दरवाज़ा बन्द था। लड़की ने एक पल्ला ढकेला। बीच की ज़ंजीर फैल गई। पल्लों के बीच जगह बन गई। पहले लड़की उससे निकली। फिर मोहिसन। ऊपर जाने की सीढ़ियाँ फिर थीं। दोनों सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आ गए। इन सीढ़ियों के पार आँगन था। आँगन के पार बाहर गली में उतरने की सीढ़ियों का दरवाज़ा था। दाएँ हाथ पर आँगन था। आँगन खाली था। कोने में तुलसी का पेड़ था। दो गाय बँधी थीं।

"गाय ऊपर कैसे आईं?" मोहसिन ने पूछा।

"बाद में बताएँगे।" लाजवन्ती ने उसे ढकेला।

दोनों ने भागते हुए आँगन पार किया। मेज़ पर पहुँचकर लड़की ने मोहसिन का हाथ छोड़ दिया। दरवाज़ा खोलकर उसने मोहसिन को घर के बाहर कर दिया।

"हम कल फिर नाचेंगे हुस्ना।" दरवाज़े के बाहर मोहसिन बोला।

"हाँ... हम रोज़ नाचेंगे मोहन।" दरवाज़े के अन्दर से लाजवन्ती बोली।

मोहसिन हँसा। पता नहीं किस पर। लाजवन्ती हँसी। पता नहीं किस पर। पीछे अकेला छूटा रह गया नाचघर भी हँसा। पता नहीं किस पर।

(अगले अंक में जारी...)

भरोसे का लेन-देन

दिलीप चिंचालकर

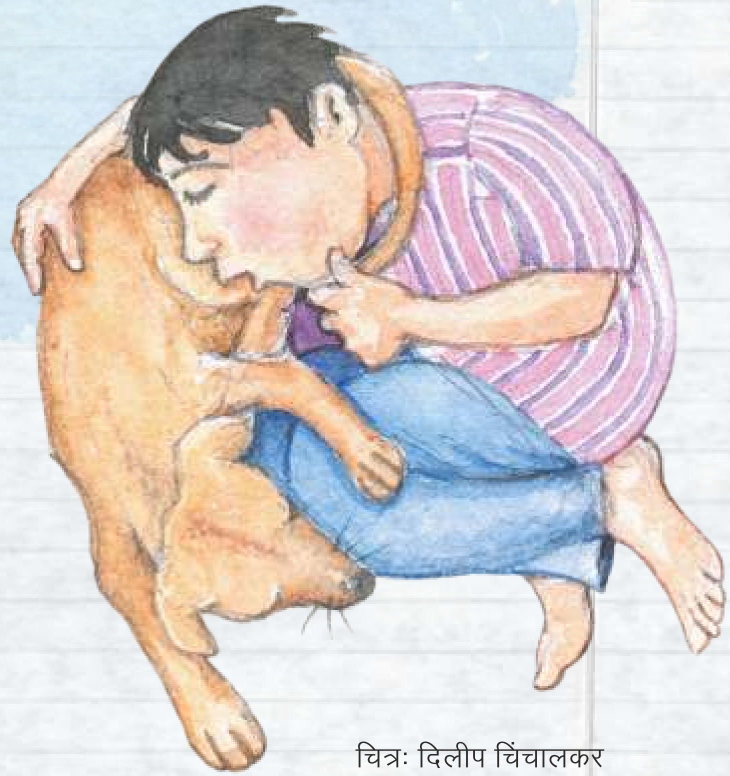

चित्र: दिलीप चिंचालकर

बंडू ने खुद हो कर हमसे दोस्ती भिड़ाई थी। बंडू यानी मराठी में शरारती। बंडू एक लाल रंग का, मझौले कद का श्वान है। वह दिन में कई बार मेरे घर के सामने से निकलता। गली के दूसरे छोर पर बनी बहुमंज़िला इमारत के बरामदे में उसका ठिया था। जब मैं बगीचे के दरवाज़े पर खड़ा होता और बंडू का उधर से निकलना होता, वह अकसर दुम हिलाकर हैलो कहता हुआ जाता। मैं भी मुँह गोल करते हुए पुचकारने की आवाज़ के साथ उसका जवाब देता। कुछ ही दिनों में उसने हमें पाल लिया। कभी भी हमारे घर आने का उसका सिलसिला शुरू हो गया।

इस बात को एक साल से ऊपर हो गया है। दिन में एक या दो बार वह हमारे घर आता है। नाश्ता, गपशप, झपकी लेने के बाद अपने काम पर निकल जाता है। ऐसा नहीं कि वह आवारा है। गली के उस छोर पर उसका एक नन्हा दोस्त है जिसके परिवार में बंडू की थोड़ी हिस्सेदारी है। बच्चे के साथ वह किसी कोचिंग क्लास में बाहर तक जाता भी है।

थोड़ी-सी जान पहचान के बाद बंडू को हमारे घर गाढ़ी नींद में सोता देखकर लगता है कि इसे कितना भरोसा है हम पर। सड़क पर रहनेवाले प्राणियों को देखकर मन में आता है कि कितने मज़े से ये सड़क किनारे या कभी ऐन सड़क पर सो जाते हैं। इन्हें भरोसा होता है कि कोई इन्हें कुचलेगा या मारेगा नहीं।

मैंने कहीं पढ़ा याद है कि विश्वास करना मनुष्य का भी स्वभाव होता है। पर मुझे तो मेरे मित्र, परिचित और अजनबी भी यही कहते मिले हैं कि किसी पर भरोसा मत करो। बड़ा अटपटा है। मैं अकसर रेल के डिब्बे में, सड़क पर किसी बूढ़े या देहात से आकर शहर में भटकते अजनबी को दस-पाँच रुपए देना चाहता हूँ। दूसरों के कहने में आकर पहले मैं ठिठक जाता था। फिर बंडू को ध्यान में रखकर पाँच रुपयों का भरोसा खरीदने से शुरुआत की। दस-बीस की पूँजी से आगे बढ़ता हुआ अब मैं सौ रुपयों तक का प्रेम का सौदा करने लगा हूँ। विश्वास का लेन-देन भला लगता है। मुझे समझ में आ रहा है कि बंडू को कैसे कहीं भी मज़े की नींद आ जाती है। चक मक

अभ्यास

(पेज 7 का शेष भाग)

मैंने कहा, "अम्मी आवाज़ नहीं आई थी।" तब तक अप्पी भी मुँह धोकर आ गई। वह तौलिए से रगड़-रगड़कर मुँह साफ कर रही थी।

"ये तेरे चेहरे पर क्या लगा है! क्या कर रही थी तुम दोनों?" अम्मी बोलीं

यह सुनकर अप्पी रोने लगी। उन्हें रोता देख अम्मी बोलीं, "क्यों रो रही हो! ये बिस्तर पर गीला तौलिया भी रखा हुआ है। क्या कर रही थीं? बताओगी तुम दोनों?"

मैंने अम्मी से कहा, "अप्पी की गलती नहीं है। मेरी गलती है। मैं अप्पी का मेकअप कर रही थी।"

मेरी बात सुनकर वो हँसते हुए बोलीं, "मैं तो इसके चेहरे को देखते ही समझ गई थी। तुम न बताती तो भी मेकअप किट देखकर मुझे पता चल ही जाता।" यह सुनकर अप्पी भी हँसने लगी।

मज़ाक ही मज़ाक में दिन गुज़र गया। शाम में जब अब्बू आए तो अम्मी ने ये सारी बात दस्तरखान पर उन्हें बताई। पहले तो अब्बू कुछ नहीं कहे। फिर खानागोश फरमाते हुए बोले, "यह कोई मज़ाक की बात नहीं है।"

इतना कहकर वे उठे और चले गए। हमें और अम्मी को मालूम ही नहीं हुआ की अब्बू ने ऐसा क्यों कहा? लेकिन अब जब घर में कोई नहीं होता तो हम घर में ही चुपचाप बैठे रहते हैं। अप्पी तो शीशे के सामने भी नहीं जाती।

- रिहाना, पाँचवीं, दो सालों से अंकुर संस्था, दिल्ली में नियमित पढ़ने-लिखने का रियाज़ कर रही हैं।

चाँद पर बिताए चौबीस घण्टे

(पेज 27 का शेष भाग)

मैं हिम्मत करके अन्दर गया। अन्दर पहुँचकर मैं आश्चर्यचकित रह गया क्योंकि यह एक सम्पूर्ण वेध प्रयोगशाला थी। उसी वक्त एक आवाज़ गूँजी, "आप कौन हैं और यहाँ कैसे?" यह आवाज़ जानी-पहचानी थी। मैंने साहस जुटाकर जबाव दिया, "मैं शिखर हूँ।" यह सुनते ही मुझे ज़ोर की हँसी की आवाज़ सुनाई दी। "शिखर घबराओ नहीं, मैं डॉ धवन हूँ। चन्द्रमा की प्रयोगशाला में तुम्हारा स्वागत है।"

डॉ धवन मुस्कराते हुए बाहर आए। उन्होंने बताया कि वे भारत सरकार की एक बड़ी अन्तरिक्ष परियोजना पर काम कर रहे हैं और उन जैसे ही कुछ और वैज्ञानिकों ने चाँद पर एक प्रयोगशाला बना ली थी। उन्होंने मेरे साहस की प्रशंसा की और मुझे अगले चौबीस घण्टे चाँद पर बिताने को कहा क्योंकि यान की बैटरी चार्ज होने में उतना समय लगता है। अगला दिन मैंने उनके साथ अलग-अलग ग्रहों को देखने में बिताया। मैंने चाँद की मिट्टी इकट्ठा की और कुछ पत्थर भी चुने। आते समय धरती देखने का अनुभव भी विचित्र रहा। वह बड़ी सुन्दर और चमकीली लग रही थी। वे यादगार सुनहरे चौबीस घण्टे थे जो अनजाने में ही मैंने चाँद पर बिताए थे।

— शिखर बेरीवाल, चौथी, सनसिटी विद्यालय, गुड़गाँव

अक्टूबर की चित्र पहेली हल

मु	खौ	टा		सा	रं	गी		क
रै			बु	त		द	वा	त
ना	रि	य	ल		बा	ड़		र
	क्शा		बु	रा	दा		पा	न
म		डा	ल		म	शा	ल	
चा	बु	क		नों		म	क	ई
न		पे	च	क	स			ख
	कु	टी	र		ड़		सीं	
क	ली		खा		क	थ	क	ली

चित्र पहेली

► बाएँ से दाएँ
▼ ऊपर से नीचे

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल / 261 / 2015-17

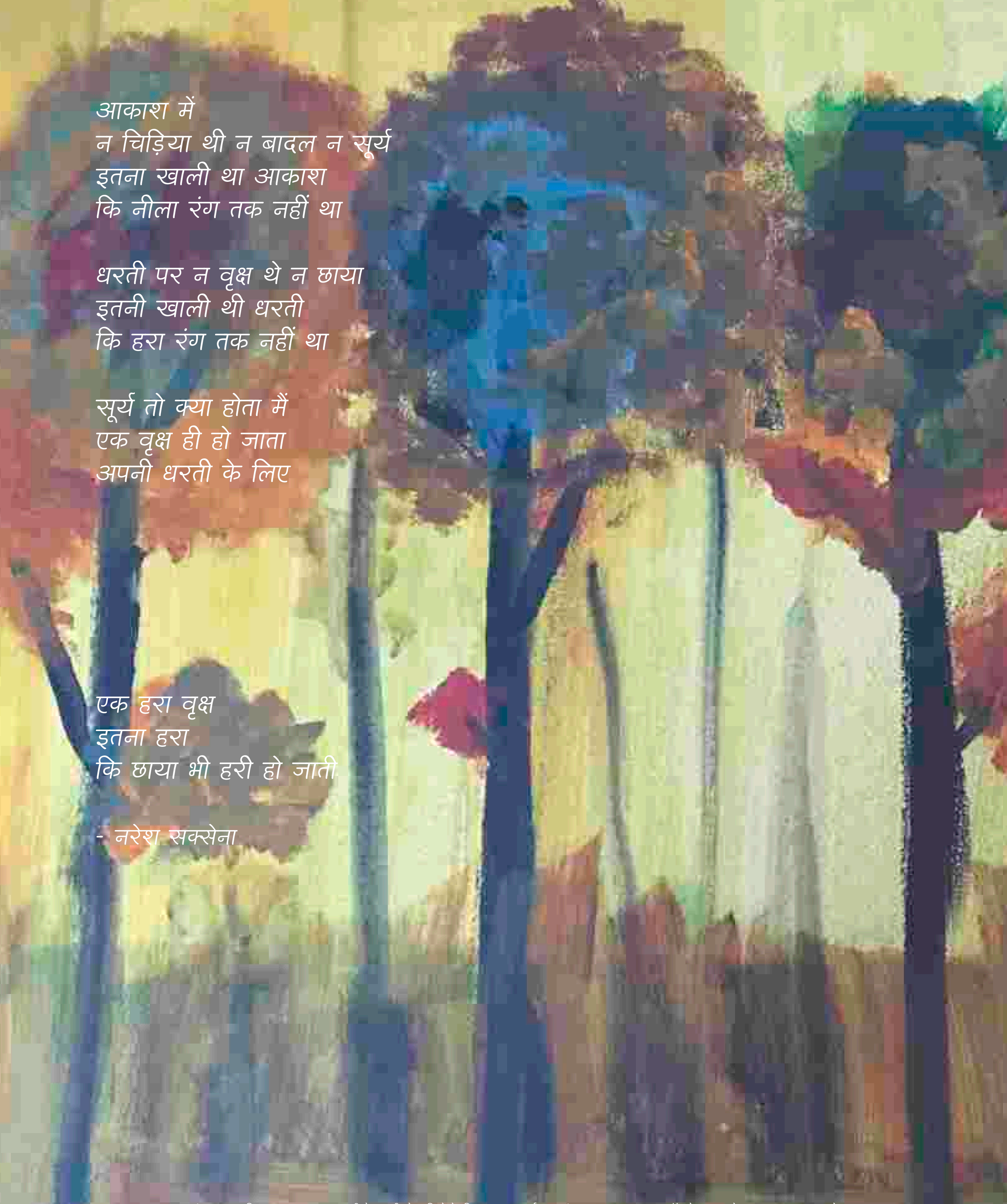

आकाश में
न चिड़िया थी न बादल न सूर्य
इतना खाली था आकाश
कि नीला रंग तक नहीं था

धरती पर न वृक्ष थे न छाया
इतनी खाली थी धरती
कि हरा रंग तक नहीं था

सूर्य तो क्या होता मैं
एक वृक्ष ही हो जाता
अपनी धरती के लिए

एक हरा वृक्ष
इतना हरा
कि छाया भी हरी हो जाती

- नरेश सक्सेना

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म.प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोनः 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादकः सुशील शुक्ल